अनुराग

बाल पत्रिका

त्रैमासिक

जुलाई-सितम्बर 2004

दस रुपये

जुलाई-अगस्त-सितम्बर की कुछ महत्वपूर्ण तिथियाँ

23 जुलाई (1906)

महान क्रान्तिकारी, 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसियेशन' के कमाण्डर-इन-चीफ अमर शहीद चन्द्रशेखर आज़ाद का जन्म दिवस।

23 जुलाई (1802)

प्रसिद्ध फ्रांसीसी लेखक, 'थ्री मस्कीटियर्स', 'काउंट आफ मांटे क्रिस्टो', 'आपल हरे' जैसे उपन्यासों के रचयिता अलेक्जेंडर ड्यूमा का जन्मदिवस।

31 जुलाई (1880)

महान कथाकार, भारतीय जनता के दुख-दर्द, आशाओं और सपनों को अपनी कलम के माध्यम से सामने लाने वाले कलम के सिपाही प्रेमचन्द का जन्मदिवस।

31 जुलाई (1940)

शहीद ऊधमसिंह का बलिदान दिवस-

अंग्रेजों द्वारा 1919 में जलियांवाला बाग में आम निहत्थी जनता पर बर्बर हत्याकाण्ड के प्रत्यक्षदर्शी बालक ऊधमसिंह ने हत्यारों को सजा देने का संकल्प बाँधा था। देश की बेगुनाह जनता के हत्यारों का सरगना जनरल सर माइकल ओडवायर था और गोलियाँ चलवाई थीं जनरल डायर ने। ऊधमसिंह ने इंग्लैण्ड जाकर लगभग 20 वर्षों बाद हत्यारे से बदला लिया। भेष बदले ऊधमसिंह ने इंग्लैण्ड के कैंग्स्टन हाल में भरी सभा में सर माइकल ओडवायर को गोलियों से भून दिया। ऊधमसिंह गिरफ्तार हो गये और अंग्रेज जालिमों ने इसी दिन उन्हें फाँसी की सजा दे दी।

6 अगस्त (1945)

हिरोशिमा दिवस। मानवता के इतिहास में एक काला दिन। इसी दिन अमरीका ने जापान के हिरोशिमा शहर पर पहला अणु बम गिराया। जिसमें लाखों लोग मारे गये, पूरा शहर तबाह हो गया, कई पीढ़ियों तक बच्चे विकलांग पैदा होते रहे। तीन दिन बाद 9 अगस्त को नागासाकी पर ऐसा ही बम गिराया गया।

9 अगस्त (1942)-

अगस्त क्रान्ति दिवस। सारा कांग्रेसी नेतृत्व गिरफ्तार था। पर नौजवानों के नेतृत्व में जनता सड़कों पर उमड़ पड़ी। बच्चे-बच्चे की जुबान पर था-'अंग्रेजों भारत छोड़ो!' ब्रिटिश हुकूमत की जड़ें काँप गईं। देश के कई हिस्सों में हफ्तों तक ब्रिटिश शासन को उखाड़कर आज़ाद सरकार कायम रही।

11 अगस्त (1908)

खुदीराम बोस का शहादत दिवस

बंगाल के इस युवा क्रान्तिकारी को ब्रिटिश साम्राज्यवादी हुकूमत ने फाँसी की सजा दे दी थी। इस बहादुर इंक़लाबी की उम्र उस वक़्त महज 19 वर्ष की थी। आज़ादी के दीवाने खुदीराम बोस ने हँसते-हँसते फाँसी का फँदा चूम लिया था।

15 अगस्त (1947)

स्वतंत्रता दिवस। हज़ारों-हज़ार लोगों की कुर्बानियों और जनता के लम्बे संघर्ष के बाद इसी दिन देश को आज़ादी मिली। लेकिन यह आज़ादी अधूरी है। सच्ची आज़ादी तब मिलेगी जब सबको शिक्षा, रोजगार और बराबरी का दर्जा मिलेगा।

24 अगस्त (1908)

शहीदेआज़म भगतसिंह के अनन्य सहयोगी, अमर शहीद शिवराम हरि राजगुरु (राजगुरु के नाम से विख्यात) का जन्म पूना (महाराष्ट्र) के खेड़ा (वर्तमान में राजगुरु नगर) में 1908 में हुआ था।

28 अगस्त (1828)

महान रूसी उपन्यासकार, 'युद्ध और शान्ति, 'आन्ना कारेनिना', 'पुनरुत्थान' जैसे विख्यात उपन्यासों के रचयिता लेव तोलस्तोय का जन्मदिवस।

29 अगस्त(1979)

प्रसिद्ध बांग्ला क्रान्तिकारी कवि नज़रूल इस्लाम की पुण्यतिथि।

13 सितम्बर (1930)

यतीन्द्रनाथ दास का शहादत दिवस। ब्रिटिश हुकूमत की जेल में राजनीतिक बँदियों के अधिकारों के लिए अनशन करते हुए सरकार पर दबाव डालने के लिए पानी पीना तक छोड़ दिया। 63 दिन के अनशन के बाद यतीन्द्रनाथ ने अपनी जान की कुर्बानी दे दी।

16 सितम्बर (1904)

क्रान्तिकारी वीर सपूत शहीद महावीर सिंह का जन्म एटा जिला (उत्तर प्रदेश) के शाहपुर टहला में 1904 में हुआ था।

25 सितम्बर (1881)

चीन के महान लेखक लू शुन का जन्मदिवस। चीनी जनता के हृदय में उनका वही स्थान है जो भारत में प्रेमचंद का है।

27 सितम्बर (1907)

शहीदआज़म भगतसिंह का जन्मदिवस।

अनुराग
बाल पत्रिका

त्रैमासिक, वर्ष 9, अंक 3
जुलाई-सितम्बर 2004

सम्पादक
कमला पाण्डेय

सह सम्पादक
अभिनव सिन्हा

सज्जा
रामबाबू

स्वत्वाधिकारी कमला पाण्डेय के लिए यशकरण लाल द्वारा डी-68, निराला नगर, लखनऊ से प्रकाशित तथा मुद्रक बाबूराव बोरकर द्वारा शान्ति प्रेस, नयागाँव (पश्चिम), लखनऊ से मुद्रित।

सम्पादकीय कार्यालय
डी-68, निरालानगर
लखनऊ-226020
फोन : (0522) 2786782

इस अंक का मूल्य : 10 रुपए
वार्षिक सदस्यता : 48 रुपए
(डाक व्यय सहित)

इस अंक में

संवाद

प्रिय बच्चो,

इस बार तुम्हारे कुछ पत्र हमें मिले, जिनमें अनुराग बाल पत्रिका के लिए तुम्हारा प्यार और सरोकार झलकता है। कुछ बच्चों ने अपने माता-पिता को भी इस पत्रिका को पढ़ने का सुझाव दिया है। यह पढ़ाई के प्रति उनकी रूचि दर्शाता है। उनकी पाठन-रूचि उन्हें बहुत कुछ सीखने के लिए प्रेरित करती है।

बच्चे चाहते हैं कि उनके माता-पिता भी और अधिक जागरूक हों, वे बच्चों के प्रति उदासीन न होकर गहरे तक उनसे सरोकार रखें, उनकी सोच के सहभागी बनें ।

पिछली बार बच्चों ने वायदा किया था कि वे छुटिटयों के अपने अनुभव लिखकर भेजेंगे-कुछ बच्चों ने अपना वायदा पूरा किया, अपनी लिखी कविताएँ, लघु कहानियाँ या अनुभव लिखकर भेजे हैं.. खास कर बाल कम्यून के बच्चों ने जिन्हें बहुत-बहुत शाबाशी।

आशा है, और बच्चे भी अपने विचार हमें लिखकर भेजेंगे। लिखने से विचार स्पष्ट होते हैं, और शब्दों के सही प्रयोग की क्षमता बढ़ती जाती है। अतः तुम्हारे लेख, कविता, कहानी, संस्मरण आदि का हमें इन्तजार है।
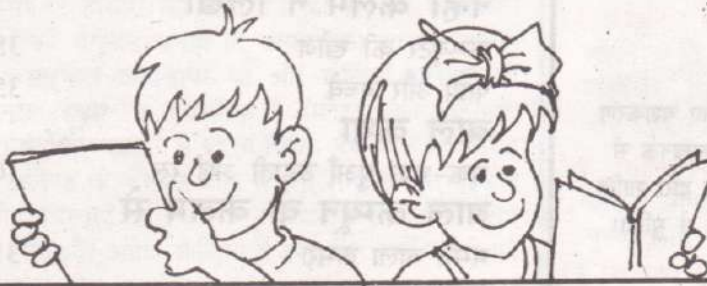
प्यारे और शुभकामनाओं के साथ

तुम्हारी नानी

-कमला पाण्डेय

पोस्ट बाक्स

आदरणीय नानी, नमस्ते

मेरी छुट्टियाँ बहुत अच्छी बीतीं। मैंने छुट्टियों में बाँसुरी बजाना सीखा। परीक्षाएँ भी अच्छी बीती। कुछ बच्चे बहुत अच्छा लिख लेते हैं। अनुराग बाल पत्रिका में उनकी छपी हुई रचनाएँ पढ़ी, बहुत मज़ा आया। मैं अपना बनाया हुआ एक चित्र भेज रही हूँ और एक निबन्ध भी।

आपकी शेफ़ाली, पंतनगर

भूल सुधार

वर्ष-8, अंक 4, अक्टूबर-दिसम्बर, 2003 अंक में छपी कविता 'माउस है या?' में लेखक का नाम सफ़दर हाशमी छप गया है, जबकि यह कविता डॉ. रीता हजेला 'आराधना' की है।

• जाकिर हुसैन (15.01.1963)

ये कहानियाँ बहुत दिन हो गए रुकैना रेहाना के नाम से प्रकाशित हो चुकी हैं। मुझे उन्हीं ने सुनाई थीं और यह कह कर सुनाई थीं कि कहीं पढ़ी हैं या किसी से सुनी हैं, मगर याद नहीं कि कब और कहाँ। मैंने उनसे पाई थीं, इसलिए उन्हीं के नाम से पहले प्रकाशित कीं। फिर रुकैया रेहाना हमेशा के लिए रुखसत हो गईं....लेकिन लिखी चूँकि मेरे हाथों से गई थीं और लोग उसे जानते हैं, इसलिए अब उन्हें अपने नाम से प्रकाशित करता हूँ। किस-किस को बताऊँ कि रुकैया रेहाना कौन थीं और कहाँ चली गईं।

—ज़ाकिर हुसैन 15.1.1963

(रुकैया ज़ाकिर हुसैन की बेटी थी जो बचपन में ही गुजर गई थी—सम्पादक)

अब्बू खाँ की बकरी

हिमालय पहाड़ का नाम तो तुमने सुना ही होगा। उससे बड़ा पहाड़ दुनिया में कोई नहीं है। हजारों मील चला गया है। और ऊँचा इतना कि अभी तक उसकी ऊँची चोटियों पर कभी कभार कोई हिम्मत वाला आदमी पहुँच पाया है, वह भी जैसे बस ढिया छूने को। इस पहाड़ के अंदर वादियों में बहुत सी बस्तियाँ भी हैं। ऐसी ही एक बस्ती अल्मोड़ा भी है।

अल्मोड़े में एक बड़े मियाँ रहते थे। उनका नाम था अब्बू खान। उन्हें बकरियाँ पालने का बड़ा शौक था। अकेले आदमी थे। बस एक-दो बकरियाँ रखते। दिन भर उन्हें चराते फिरते। उनके अजीब-अजीब नाम रखते, किसी का कल्लू, किसी का मंगलिया, किसी का

गुजरी, किसी का हुक्मा। उनसे ना जाने क्या बातें करते रहते और शाम के वक्त बकरियों को ला कर घर में बाँध देते। अल्मोड़ा पहाड़ी जगह है, इसलिए अब्बू खान की बकरियाँ भी पहाड़ी नस्ल की होतीं। अब्बू खान गरीब थे, बड़े बदनसीब। उनकी सारी बकरियाँ कभी ना कभी रस्सी तुड़ा कर रात को भाग जाती थीं। पहाड़ी बकरी बँधे-बँधे घबरा जाती है। ये बकरियाँ भाग कर पहाड़ में चली जाती थीं। वहाँ एक भेड़िया रहता था। वह उन्हें खा जाता था। मगर अजीब बात है। ना अब्बू खान का प्यार, ना शाम के दाने का लालच, उन बकरियों को भागने से रोकता था, ना भेड़िये का डर। बस शायद यह बात हो कि पहाड़ी जानवरों के मिजाज में आज़ादी की बहुत मोहब्बत होती है। ये अपनी आज़ादी किसी दामों देने को राज़ी नहीं होते और मुसीबत और खतरों के बावजूद आज़ाद रहने को आराम और आशाईश (ऐश) की कैद से अच्छा जानते हैं।

जहाँ कोई बकरी भाग निकली, अब्बू खान बेचारे सिर पकड़ कर बैठ गए। उनकी समझ ही में नहीं आता था कि हरी-हरी घास मैं उन्हें खिलाता हूँ, छुप-छुपा कर पड़ोसियों के धान के खेत में भी उन्हें छोड़ देता हूँ, शाम को दाना देता हूँ, मगर ये कमबख्त नहीं ठहरतीं और पहाड़ में जा कर भेड़िये को अपना खून पिलाना पसंद करती हैं।

जब अब्बू खान की बहुत सी बकरियाँ भाग गईं तो बेचारे बहुत उदास हुए और कहने लगे, "अब कभी बकरी नहीं पालूँगा। जिन्दगी के थोड़े दिन और हैं, बिन बकरियों के कट जाएंगे।" मगर तन्हाई बुरी चीज है। थोड़े दिन तो अब्बू खान बिन बकरियों के रहे। आखिर ना रहा गया। एक दिन कहीं से एक बकरी मोल ले आए। यह बकरी अभी बच्चा ही थी, कोई साल-सवा

साल की होगी। अब्बू खान ने सोचा कि कम उम्र बकरी लूँगा तो शायद हिल-मिल जाए और उसे जब पहले से अच्छे चारे-दाने की आदत पड़ जाएगी तो फिर यह पहाड़ का रुख ना करेगी। यह बकरी थी बहुत खूबसूरत। रंग उसका बिल्कुल सफेद था। बाल लम्बे-लम्बे थे। छोटे-छोटे काले-काले सींग ऐसे मालूम होते थे कि किसी ने आबनूस की काली लकड़ी में खूब मेहनत से तराश कर बनाए हों। लाल-लाल आँखें। तुम देखते तो कहते कि अरे, ये बकरी तो हमने ले ली होती। यह बकरी देखने में ही अच्छी ना थी, मिजाज की भी बहुत अच्छी थी। प्यार से अब्बू खान के हाथ चाटती थी। दूध चाहे तो कोई बच्चा दुह ले। ना लात मारती थी, ना दूध का

बरतन गिराती। अब्बू खान तो उसपर लट्टू हो गए थे। उसका नाम चाँदनी रखा था। और दिन भर उससे बातें करते रहते थे। कभी अपने चचा घसीटा खाम का किस्सा सुनाते थे, कभी अल्लाह बख्शे, मामूँ नत्थू खान का।

अब्बू खान ने यह सोच कर कि बकरियाँ शायद मेरे घर के तंग आँगन में घबरा जाती हैं, अपनी इस बकरी चाँदनी के लिए नया इंतजाम किया था। घर के बाहर उनका एक छोटा सा खेत था। उसके

चारों तरफ उन्होंने न जाने कहाँ-कहाँ से काँटे जमा करके डाले थे कि कोई उसमें आ ना सके। उसके बीच में चाँदनी को बाँधते थे और रस्सी खूब लंबी रखी थी कि खूब इधर-उधर घूम सके। इस तरह चाँदनी को अब्बू ख़ान के यहाँ खासा जमाना गुजर गया और अब्बू खान को यकीन हो गया कि आखिर को एक बकरी तो हिल-मिल गई। अब यह ना भागेगी।

मगर अब्बू खान धोखे में थे। आजादी की ख्वाहिश इतनी आसानी से दिल से नहीं मिटती। पहाड़ और जंगल में रहने वाले आजाद जानवरों का दम घर की चारदीवारी में घुटता है, तो काँटों से घिरे हुए खेतें में भी उन्हें चैन नसीब नहीं होता। कैद, कैद सब एक सी। थोड़े दिन के लिए चाहे ध्यान बँट जाए, मगर फिर पहाड़ और जंगल याद आते हैं और कैदी अपनी रस्सी तुड़ाने की फिक्र करता है। अब्बू खान का ख्याल ठीक ना था कि चाँदनी पहाड़ की हवा भूल गई।

एक दिन सुबह-सुबह जब सूरज अभी पहाड़ के पीछे ही था कि चाँदनी ने पहाड़ की तरफ नजर की। मुँह जो जुगाली की वजह से चल रहा था, रुक गया और चाँदनी ने दिल में कहा, "वह पहाड़ की चोटियाँ कैसी हसीन हैं। वहाँ की हवा का क्या मुकाबला। फिर वहाँ उछलना, कूदना, ठोकरें खाना और यहाँ हर वक्त बँधे रहना। गर्दन में आठ पहर यह कमबख्त रस्सी। ऐसे घेरों में गधे और खच्चर ही भले चुग लें, हम बकरियों को तो जरा बड़ा मैदान चाहिए।"

इस ख्याल का आना था और चाँदनी अब वह पहली चाँदनी ही ना थी। ना उसे हरी-हरी घास अच्छी लगती थी, ना पानी मजा देता था, ना अब्बू खान की लंबी दास्तानें उसे भाती थीं। दिन पर दिन दुबली होने लगी। दूध घटने लगा। हर वक्त मुँह पहाड़ की तरफ रहता और रस्सी को खींचती और अजीब दर्द भरी आवाज से "में-में" चिल्लाती।

अब्बू खान समझ गए कि हो ना हो कोई बात

जरूर है, लेकिन यह समझ में नहीं आता था कि क्या है। एक दिन सुबह जब अब्बू खान ने दूध दुह लिया तो चाँदनी ने उनकी तरफ मुँह फेरा और अपनी बकरियों वाली जुबान में कहा, "अब्बू खान मियाँ, अब मैं तुम्हारे पास रहूँगी तो मुझे बड़ी बीमारी हो जाएगी। मुझे तो तुम पहाड़ ही में चले जाने दो।"

अब्बू खान बकरियों की बोली समझने लगे थे। चिल्ला कर बोले, "या अल्लाह, यह भी जाने को कहती है, यह भी।" और मारे सदमे के मिट्टी की लुटिया जिसमें दूध दुहा था हाथ से गिरी और पाश-पाश (टुकड़े-टुकड़े) हो गई।

अब्बू खान वहीं घास पर बकरी के पास बैठ गए और निहायत गमगीन आवाज में पूछा, "क्यों बेटी चाँदनी, तू भी मुझे छोड़ना चाहती है?"

चाँदनी ने जवाब दिया, "हाँ! अब्बू खान मियाँ, चाहती तो हूँ।"

"अरे, तो क्या तुझे चारा नहीं मिलता? या दाना पसंद नहीं? बनिए ने घुने दाने मिला दिए क्या? मैं आज ही और दाना लाऊँगा।

"नहीं...नहीं मियाँ, मुझे दाने की कोई तकलीफ नहीं।" चाँदनी ने जवाब दिया।

"तो फिर क्या रस्सी छोटी है। मैं और लंबी कर दूँगा।"

चाँदनी ने कहा, "उससे क्या फायदा?"

"तो आखिर फिर बात क्या है? तू चाहती क्या है?"

चाँदनी बोली, "कुछ नहीं। बस मुझे तो पहाड़ में जाने दो।"

अब्बू खान ने कहा, "अरी कमनसीब, तुझे यह भी खबर है कि वहाँ भेड़िया रहता है। वह जब आएगा तो क्या करेगी?"

चाँदनी ने जवाब दिया, "अल्लाह ने दो सींग दिए हैं। उनसे उसे मारूँगी।"

"हाँ...हाँ, जरूर," अब्बू खान बोले, "भेड़िये पर तेरे सींगों ही का तो असर होगा। वह तो मेरी कई बकरियाँ हड़प कर चुका है। उनके सींग तो तुझसे बहुत बड़े थे। तू तो कल्लू को जानती नहीं थी, वह यहाँ पिछले साल थी। बकरी काहे को थी, हिरन थी, हिरन। रात भर सींगों से भेड़िए के साथ लड़ी। मगर फिर सुबह होते-होते उसने दबोच लिया और खा गया।"

चाँदनी ने कहा, "अरे..रे..रे बेचारी कल्लू! मगर खैर। अब्बू खान मियाँ, उससे क्या होता है, मुझे पहाड़ में जाने ही दो।"

अब्बू खान कुछ झुँझलाए और बोले, "या

अल्लाह! यह भी जाती है। मेरी एक चहेती बकरी और उस कमबख्त भेड़िए के पेट में जाती है... मगर नहीं.. नहीं, मैं उसे तो जरूर बचाऊँगा। कमबख्त, एहसान फरामोश, तेरी मर्जी के खिलाफ तुझे बचाऊँगा। अब तो तेरा इरादा मालूम हो गया है। अच्छा, बस चल तुझे कोठरी में बाँधा करूँगा। नहीं तो मौका पा कर चल देगी।"

अब्बू खान ने आ कर चाँदनी को एक कोने की कोठरी में बंद कर दिया और ऊपर से जंजीर चढ़ा दी।

मगर गुस्से और झुंझलाहट में कोठरी की खिड़की बंद करना भूल गए। इधर जहाँ उन्होंने कुण्डी चढ़ाई, उधर चाँदनी उचक कर खिड़की में से बाहर। यह जा, वह जा।

* * *

चाँदनी पहाड़ पर पहुँची तो उसकी खुशी का क्या पूछना था। पहाड़ पर पेड़ उसने पहले भी देखे थे, लेकिन आज उनका और ही रंग था। उसे ऐसा मालूम होता था कि सबके सब खड़े हुए उसे मुबारकबाद दे रहे हैं कि फिर हममें आ मिली। इधर-उधर सेवती के फूल मारे खुशी के खिलखिला-खिलखिला कर हँस रहे थे। कहीं ऊँची-ऊँची घास उससे गले मिल रही थी। मालूम होता था कि सारा पहाड़ मारे खुशी के मुस्करा रहा है और अपनी बिछड़ी हुई बच्ची के वापस आने पर फूला नहीं समाता। चाँदनी की खुशी का हाल कोई क्या बताए। ना चारों तरफ काँटों की बाड़, ना खूँटा, ना रस्सी। और चारा! वह-वह जड़ी-बूटियाँ कि अब्बू खान गरीब, बावजूद अपनी सारी मोहब्बत और शफक्कत (प्यार) के ला ना सकते।

चाँदनी कभी इधर उछलती, कभी उधर, यहाँ से कूदी, वहाँ फाँदी, कभी चट्टान पर है, कभी खड्ड में। इधर जरा फिसली, फिर सँभली। एक चाँदनी के आने से सारे पहाड़ में रौनक सी मालूम होती थी। ऐसा लगता था जैसे अब्बू खान की दस-बारह बकरियाँ छूट कर यहाँ आ गई हों।

एक दफा घास पर मुँह मार कर जो जरा सिर उठाया तो चाँदनी की नजर अब्बू खान के मकान और उस काँटों वाले घेर पर पड़ी। उन्हें देख कर चाँदनी खूब हँसी और दिल ही दिल में कहने लगी, "या खुदा! कोई देखे तो। कितना जरा सा मकान है और कैसा छोटा सा घेर। या अल्लाह! मैं इतने दिन उसमें कैसे रही? उसमें आखिर समाती कैसे थी?" पहाड़ की चोटी पर से उस नन्ही सी ज़ान को नीचे की सारी दुनिया हेच (तुच्छ)
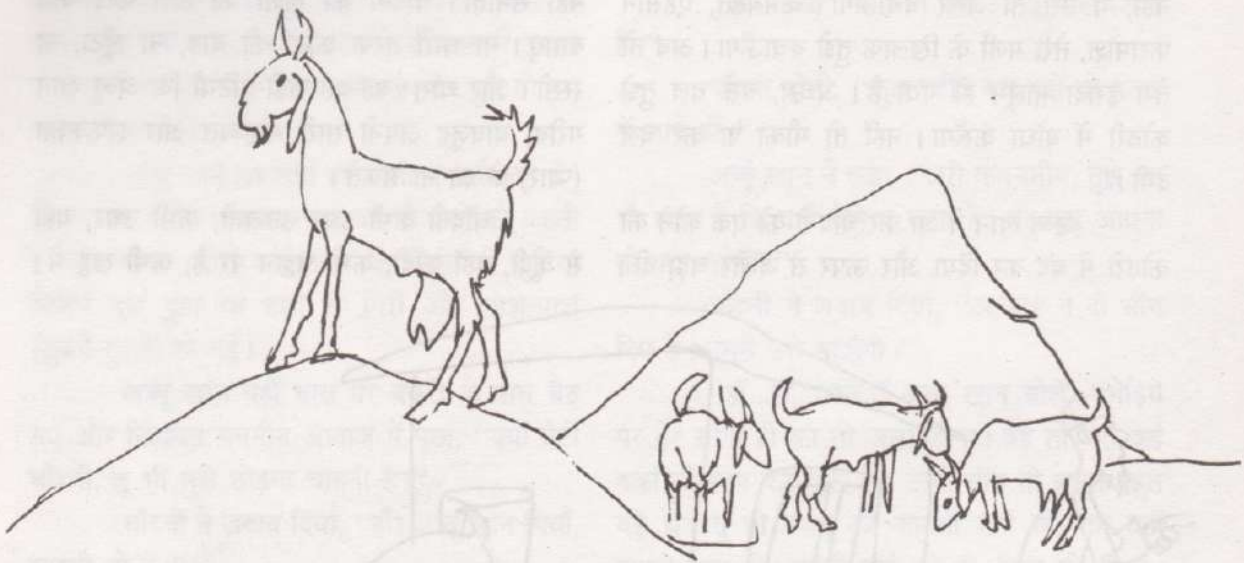
नजर आती थी।

चाँदनी के लिए यह दिन भी एक अजीब दिन था। दोपहर तक इतनी उछली-कूदी कि शायद सारी उम्र में इतनी उछली-कूदी नहीं होगी। दोपहर ढलते-ढलते उसे पहाड़ी बकरियों का एक गल्ला दिखाई दिया। गल्ले की बकरियों ने उसे खुशी-खुशी अपने पास बुलाया और उससे हाल-अहवाल पूछा। गल्ले में कुछ जवान बकरे भी थे। उन्होंने भी चाँदनी की बड़ी खातिर-तवाजो की। बल्कि उनमें एक बकरा था, जरा काले-काले रंग का जिसपर कुछ सफेद टप्पे थे। वह चाँदनी को भी अच्छा लगा। और ये दोनों बहुत देर तक इधर-उधर फिरते रहे। उनमें ना जाने क्या-क्या बातें हुई। और कोई तो था नहीं, एक चश्मा (झरना) पानी का बह रहा था, उसने सुनी होगी। कभी कोई वहाँ जाए और उस चश्मे से पूछे तो शायद कुछ पता लगे। और फिर भी क्या खबर। यह चश्मा भी शायद ना बताए। एक की बात दूसरे से कहना कुछ अच्छी बात नहीं।

खैर बकरियों का गल्ला तो ना मालूम किधर चला गया। वह जवान बकरा भी इधर-उधर घूम कर अपने साथियों से जा मिला। चाँदनी को अभी आजादी की इतनी आरजू थी कि उसने गल्ले के साथ हो कर अभी से अपने ऊपर पाबंदियाँ लेना गवारा नहीं किया, और एक तरफ को चल दी। शाम का वक्त हुआ। ठंडी हवा चलने लगी। सारा पहाड़ लाल सा हो गया और चाँदनी ने सोचा, "ओहो, अभी से शाम?" नीचे अब्बू खान का घर और वह काँटों वाला घेर दोनों कोहरे में छिप गए थे। नीचे कोई चरवाहा अपनी बकरियों को बाड़े में बंद करने लिए जा रहा था। उनकी गर्दन की घण्टियाँ बज रही थीं। चाँदनी इस आवाज को खूब पहचानती थी। उसे सुन कर उदास हो गई। होते-होते अँधेरा होने लगा और पहाड़ में एक तरफ से आवाज आई, "खो...खा"

यह आवाज सुन कर चाँदनी को भेड़िए का ख्याल आया। दिन भर एक दफा भी उसका ध्यान इधर

नहीं गया था। पहाड़ के नीचे से एक सीटी और बिगुल की आवाज आई। यह बचारे अब्बू खान थे जो आखिरी कोशिश कर रहे थे कि उसे सुन कर चाँदनी फिर लौट आए। उधर से वह कह रहे थे, "लौट आ, लौट आ।" इधर से दुश्मन-ए-जान भेड़िए की आवाज आ रहीं थी।

चाँदनी के जी में कुछ तो आई कि लौट चले। लेकिन उसे खूँटा याद आया, रस्सी याद आई, काँटों का घेर याद आया। और उसने सोचा कि उस जिन्दगी से तो यहाँ की मौत अच्छी। आखिर को सीटी और बिगुल की आवाज बंद हो गई। पीछे के पत्तों की खड़खड़ाहट सुनाई दी। चाँदनी ने मुड़ कर देखा तो दो कान दिखाई दिए। सीधे खड़े हुए, और दो आँखें जो अँधेरे में चमक रही थीं। भेड़िया पहुँच गया था।

भेड़िया जमीन पर बैठा था। नजर बेचारी बकरी पर जमी थी। उसे इत्मीनान था, जल्दी ना थी। खूब जानता था कि अब कहाँ जाती है। बकरी ने उसकी तरफ रुख किया तो वह मुस्कराया और बोला, "ओहो, अब्बू खान की बकरी है। खूब खिला-पिला कर मोटा किया है।" यह कह कर उसने अपनी लाल-लाल जुबान अपने नीले-नीले होंठों पर फेरी।

चाँदनी को कल्लू का किस्सा याद आया, जो अब्बू खान ने उसे बताया था और सोचा कि मैं क्यों खाह-मखाह रात भर लड़ कर जान दूँ। अभी क्यों ना अपने को सुपर्द कर दूँ। लेकिन फिर ख्याल किया कि नहीं। अपना सिर झुकाया, सींग आगे को किया और पैंतरा बदल कर भेड़िए के मुंकाबले में आई कि बहादुरों का यही शेवा (तौर-तरीका) है। कोई यह नहीं समझे कि चाँदनी अपनी बिसात ना जानती थी और भेड़िए की ताकत का अंदाजा उसे ना था। वह खूब जानती थी कि बकरियाँ भेड़िये को नहीं मार सकतीं। वह तो सिर्फ चाहती थी कि अपनी बिसात के मुताबिक मुकाबला करे। जीत-हार पर अपना काबू नहीं। मुकाबला जरूरी है। जी में यह सोचती थी कि देखूँ कि कल्लू की तरह रात भर मुकाबला कर सकती हूँ या नहीं।

कुछ देर जब गुजर गई तो भेड़िया बढ़ा। चाँदनी ने भी सींग सँभाले और वह-वह हमले किए कि भेड़िए का जी जानता होगा। दसियों मरतबा उसने भेड़िए को पीछे रेल दिया। सारी रात इसी में गुजरी। कभी-कभी चाँदनी ऊपर आसमान की तरफ देख लेती और सितारों से आँखों-आँखों में कह देती कि ऐ काश! इसी तरह सुबह हो जाए।

सितारे एक-एक करके गायब हो गए। चाँदनी ने आखिरी वक्त में अपना जोर दुगुना कर दिया। भेड़िया भी तंग आ गया था कि दूर से एक रोशनी सी दिखाई दी। एक मुर्ग ने कहीं से बाँग दी। नीचे बस्ती में मस्जिद से अजान की आवाज आई। चाँदनी ने दिल में कहा, "अल्लाह, तेरा शुक्र है। मैंने अपने बस भर मुकाबला किया। अब तेरी मर्जी।"

मुअज्जिन आखिरी दफा अल्लाहो अकबर कह रहा था कि चाँदनी बेदम जमीन पर गिर पड़ी। उसका सफेद बालों का लिबास खून से बिल्कुल सुर्ख था। भेड़िए ने उसे दबोच लिया और खा गया!

ऊपर दरख्त पर चिड़ियाँ बैठी देख रही थीं। उनमें इसपर बहस हो रही थी कि जीत किसकी हुई। सब कहती हैं कि भेड़िया जीता। एक बूढ़ी सी चिड़िया है। वह जिद पर अड़ी है कि चाँदनी जीती।

प्रस्तुति—शाहिद अख्तर

कहानी

चमचमाता मोती
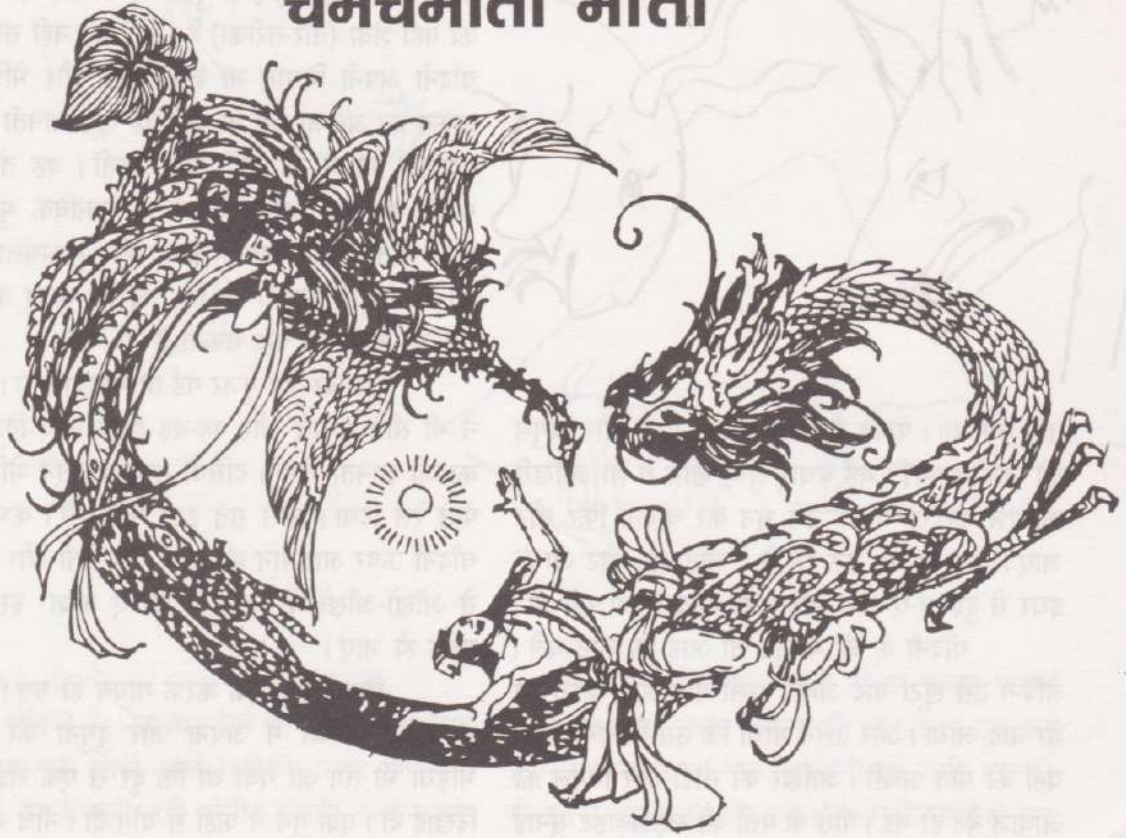
बहुत समय पहले देवलोक में आकाशगंगा के पूर्वी तट पर एक गुफा में एक ड्रैगन रहता था। ड्रैगन का रंग बरफ की तरह सफेद था और उसका नाम जेड ड्रैगन था। नदी के दूसरे तट पर वन में एक सुनहरी मादा अमरपक्षी रहती थी।

वे दोनों हर रोज सुबह दूर से एक-दूसरे का अभिवादन करते और अपनी-अपनी राह चले जाते। मादा अमरपक्षी आकाश में उड़ जाती और जेड ड्रैगन आकाशगंगा में तैरने लगता। एक दिन अचानक परीद्वीप में उनकी मुलाकात हो गई। वहाँ सुनहरी मादा अमरपक्षी को एक पारदर्शी गोलाकार पत्थर दिखाई दिया।

''जरा देखो तो, यह कितना सुन्दर है!'' उसने जेड ड्रैगन से कहा। ''आओ हम दोनों उसे चमकाकर मोती बना दें जेड ड्रैगन बोला।

जेड ड्रैगन ने अपने पंजे से तथा सुनहरी मादा अमरपक्षी ने अपनी चोंच से उसे तराशा। सुनहरी मादा अमरपक्षी जादू के पहाड़ से ओसकण ले आई और जेड ड्रैगन आकाशगंगा से पानी ले आया। दोनों ने इस गोलाकार पत्थर को चमकाना शुरू कर दिया। वे हररोज उसे चमकाते रहे। कई वर्ष कठोर परिश्रम करने के बाद यह पत्थर एक चमचमाते मोती में बदल गया। इस दौरान उन दोनों का प्रेम भी बढ़ता गया। दोनों ही
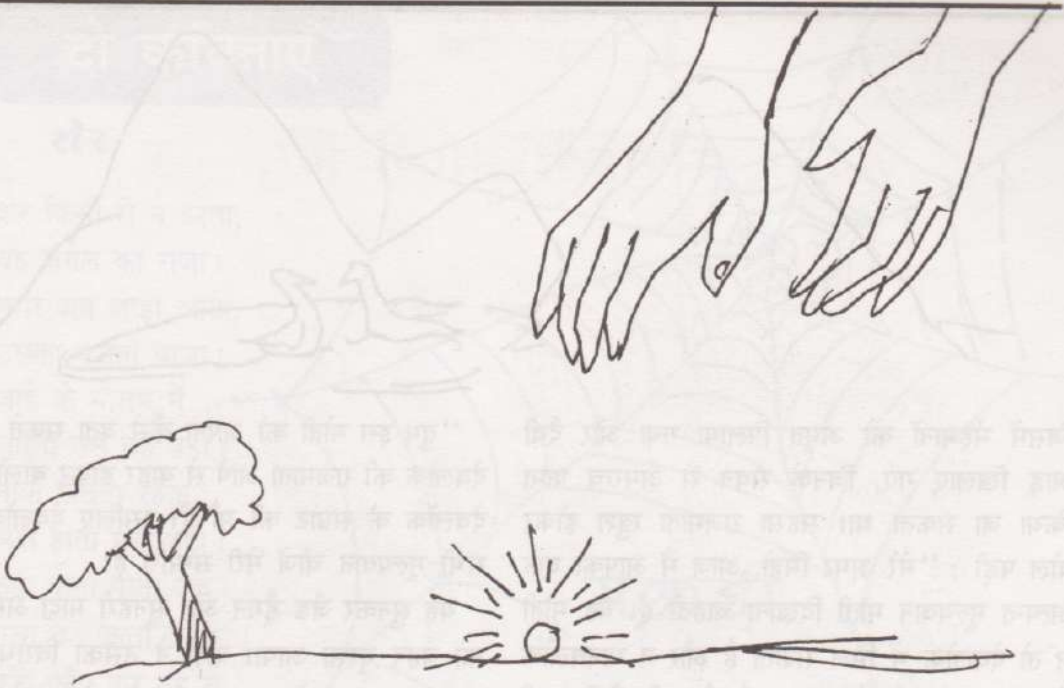
मोती को प्यार करते थे। उन्होंने जीवनभर इसी द्वीप में रहने का निश्चय किया, ताकि वे इस मूल्यवान मोती की रक्षा कर सकें।

वह एक जादू का मोती था। जहाँ भी उसकी किरणें पड़तीं, वहाँ की हालत सुधर जाती। पेड़ पहले से ज्यादा हरेभरे हो जाते, फूल पहले से ज्यादा देर तक खिलने लगते और खेतों में भरपूर फसल उगने लगती।

एक दिन देवलोक की राजमाता को आकाश में इस मोती की चमक दिखाई दी। वह मोती की सुन्दरता पर मुग्ध हो गई। और उसे हासिल करने के लिए बेचैन हो गई। उसने यह चमचमाता मोती चुराने के लिए अपने एक विश्वसनीय रक्षक को भेजा। रक्षक एक ऐसे समय वहाँ पहुँचा जब सुनहरी मादा अमरपक्षी और जेड ड्रैगन गहरी नींद में सो रहे थे। जब रक्षक मोती चुराकर लौट आया, तो राजमाता ने उसे एक ऐसे गुप्त तहखाने में रख दिया जहाँ पहुँचने के लिए नौ दरवाजों के ताले खोलने पड़ते थे। तहखाने में वह अकेली ही मोती की सुन्दरता का आनन्द लेती थी।

सुबह होते ही जेड ड्रैगन और मादा अमरपक्षी को मालूम हो गया कि उनका मोती किसी ने चुरा लिया है। वे बड़े दुखी हुए और चारों तरफ उसकी खोज करने लगे। जेड ड्रैगन ने आकाशगंगा का कोना-कोना छान मारा; मादा अमरपक्षी ने परीद्वीप के पहाड़ों का चप्पा-चप्पा खोज डाला। पर उनकी सारी मेहनत बेकार गई। फिर भी उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। उन्हें पक्का यकीन था कि एक न एक दिन उनका यह मूल्यवान मोती अवश्य मिल जाएगा।

देवलोक की राजमाता का जन्मदिन मनाने के लिए एक विशेष समारोह का आयोजन किया गया। समूचे ब्रह्माण्ड के देवी-देवता समारोह में भाग लेने राजमहल में जा पहुँचे। ''आप पूर्वी सागर के समान वैभवशाली और दक्षिणी पर्वत के समान अजर अमर रहें!'' सबने एक स्वर से कहा। यह सुनकर राजमाता बेहद खुश हुई। उसने एक शानदार भोज का आयोजन किया,

जिसमें मेहमानों को अमृत पिलाया गया और दैवी आड़ू खिलाए गए, जिनके सेवन से अमरत्व प्राप्त किया जा सकता था। सहसा राजमाता खुश होकर बोल पड़ी : "मेरे अमर मित्रो, आज मैं आपको एक अत्यन्त मूल्यवान मोती दिखाना चाहती हूँ। यह मोती न तो देवलोक में मिल सकता है और न मानवलोक में।" इतना कहने के बाद उसने नौ चाबियाँ निकाली और एक-एक करके नौ के नौ दरवाजे खोल दिए। अन्त में वह गुप्त तहखाना आ गया जहाँ उसने जादू का मोती रखा हुआ था। मोती को सोने की रकाबी में रखकर वह बड़ी सावधानी से उस हाल में ले आई जहाँ मेहमान बैठे थे। पूरा हाल मोती की रोशनी से प्रकाशित हो उठा। मेहमान उसकी चमक-दमक देखकर दंग रह गए और उसकी भरसक प्रशंसा करने लगे। सुनहरी मादा अमरपक्षी ने ज्यों ही आकाश में जादू के मोती का प्रकाश देखा, वह चिल्ला पड़ी : 'जेड ड्रैगन, वह देखो! क्या वह रोशनी हमारे मोती की नहीं है?" जेड ड्रैगन ने ऊपर देखा और बोला: "बेशक यह रोशनी हमारे ही मोती की है! आओ, हम उसे ले आएं!"

वे दोनों मोती के प्रकाश की ओर उड़ने लगे और अन्त में देवलोक की राजमाता के महल में जा पहुँचे। वहाँ पहुँचने पर उन्होंने देखा कि मोती को चारो तरफ से उसके प्रशंसकों ने घेर रखा है। "यह हमारा मोती है!" जेड ड्रैगन और सुनहरी मादा अमरपक्षी ने चिल्लाकर कहा। वे भीड़ को चीरते हुए मोती के पास जा पहुँचे।

"तुम इस मोती को अपना कैसे बता सकते हो?" देवलोक की राजमाता आपे से बाहर होकर बोली। "मैं देवलोक के सम्राट की माँ हूँ। इसलिए देवलोक की सभी मूल्यवान चीजें मेरी सम्पत्ति हैं।

यह सुनकर जेड ड्रैगन और सुनहरी मादा अमरपक्षी को बेहद गुस्सा आया। दोनो ने उसका विरोध करते हुए एक स्वर में कहा : "इस मोती को न तो देवलोक ने जन्म दिया है और न ही मानव लोक ने। यह हम दोनों के प्रेम और दीर्घकालीन कठोर परिश्रम का फल है।"

देवलोक की राजमाता ने रकाबी को मजबूती से पकड़ लिया और रक्षकों को हुक्म दिया कि वे जेड ड्रैगन और सुनहरी मादा को बाहर खदेड़ दें। लेकिन उन दोनों ने हार नहीं मानी और मोती के लिए संघर्ष करते रहे। मोती पाने के लिए तीनों के बीच काफी देर तक छीना-झपटी होती रही। अचानक मोती देवलोक से पृथ्वी पर गिरा पड़ा। ज्यों ही वह जमीन पर गिरा, वहाँ एक विशाल झील बन गई, जो हाङ्चओ की पश्चिमी झील के रूप में आज भी मौजूद है। जेड ड्रैगन और सुनहरी माद अमरपक्षी मोती का विछोह नहीं सह पाए और दो पहाड़ों में बदल गए। ये दोनों पहाड़ हाङ्चओ की पश्चिमी झील के किनारे आज भी खड़े हैं।

दो कविताएँ

शेर

शेर किसी से न डरता,
वह जंगल का राजा।
मगर जब जाड़ा आता,
उसका बजता बाजा।
जाड़े के मौसम में
लगती उसे ठंड बड़ी।
नाक पोंछता रहता,
सर्दी होती घड़ी-घड़ी।
ठंडा पानी पीता जब,
गला बैठ जाता उसका।
काँप-काँप कर ठंड से,
वह गुफा में खिसका।
बाहर गुफा से आकर,
रोब जमा नहीं पाता।
जाड़े के डर से शेर,
बस गीदड़ बन जाता।

–हर प्रसाद 'रोशन', हल्द्वानी

मकड़ी

तुमने न कुछ सोचा मकड़ी
न कुछ देखा-भाला रे।
मेरे पढ़ने के कमरे में
लगा दिया क्यों जाला रे?
चुपके-चुपके तुमने आखिर
क्यों ऐसा कर डाला रे?
लगता शायद तेरे मन में
है जरूर कुछ काला रे।
चाहे मच्छर हो या मक्खी
आकर फँसे मसाला रे।
काम तुम्हारा मुझको लगता
केवल गड़बड़-झाला रे।
कसकर लेगा खबर तुम्हारी
नौकर झाड़ूवाला रे।
रख देगा तेरे तिलिस्म का
तोड़ के झट से ताला रे।

–रामानुज त्रिपाठी, सुल्तानपुर

बाल कथा

भक-भक धुआँ उड़ाती आई रेल
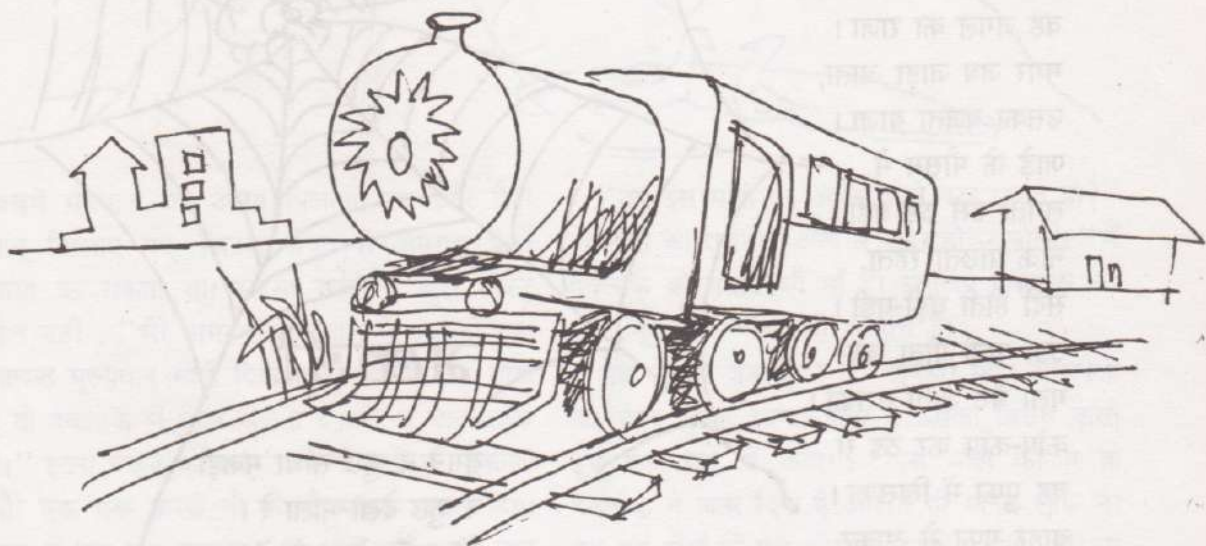
एक था भाप से चलने वाला बेचारा रेल इंजन। लोको शेड के एकान्त कोने में चुपचाप खड़ा रहता। उसके कल-पुर्जे जंग और धूल से भूरे और मटमैले होते जा रहे थे। अब उसका इस्तेमाल बोगियों को खींचने में नहीं होता। इस अनुपयोगी इंजन की देख-रेख भी नहीं की जाती। वर्षों से एक जगह पड़े-पड़े उसके नीचे पटरियों के चारों तरफ घास उग आई थी।

अपनी इस उपेक्षा से इंजन दुःखी रहता था। कभी-कभी कोई बिजली या डीजल से चलने वाला इंजन विश्राम या मरम्मत के लिये आकर खड़ा होता तो यह इंजन उससे अपनी उपेक्षा के बारे में प्रश्न करता, 'भाई अब भी मैं छुक-छुक करके पटरियों पर दौड़ सकता हूँ। तुम्हारी तरह बोगियों को खींच सकता हूँ। मगर मुझे इस तरह उपेक्षित क्यों रखा गया है?'

पहले तो भाप के इंजन की मासूमियत पर अन्य इंजन हँसते फिर उसको समझाते, 'भाई तुम तो कोयला और पानी से चलते हो। कोयला जलने से धुआँ उड़ता है। धुआँ से वातावरण प्रदूषित होता है। प्रदूषण से जीवों के अस्तित्व को खतरा है। अतः तुम्हें ही नहीं धीरे-धीरे सभी भाप के इंजनों को बैठा दिया गया है।'

मगर हठी रेल का इंजन उनकी बातों से सहमत नहीं होता। अपने ख्यालों में डूबा रहता। वह तो अब भी बोगियों की लम्बी-लम्बी कतारों के जोड़े छुक-छुक करके लौह पटरियों पर दौड़ना चाहता था। कभी-कभी उसका लौह-हृदय खिन्न होकर रोने लगता।

एक दिन छोटे-छोटे बच्चों का एक झुण्ड अपने अध्यापकों के साथ उसके पास आया। अध्यापक बच्चों को इंजन दिखाकर उसके बारे में समझाने लगे।

अध्यापकों के मुँह से अपनी गाथा सुनकर इंजन खुशी से झूम उठा।
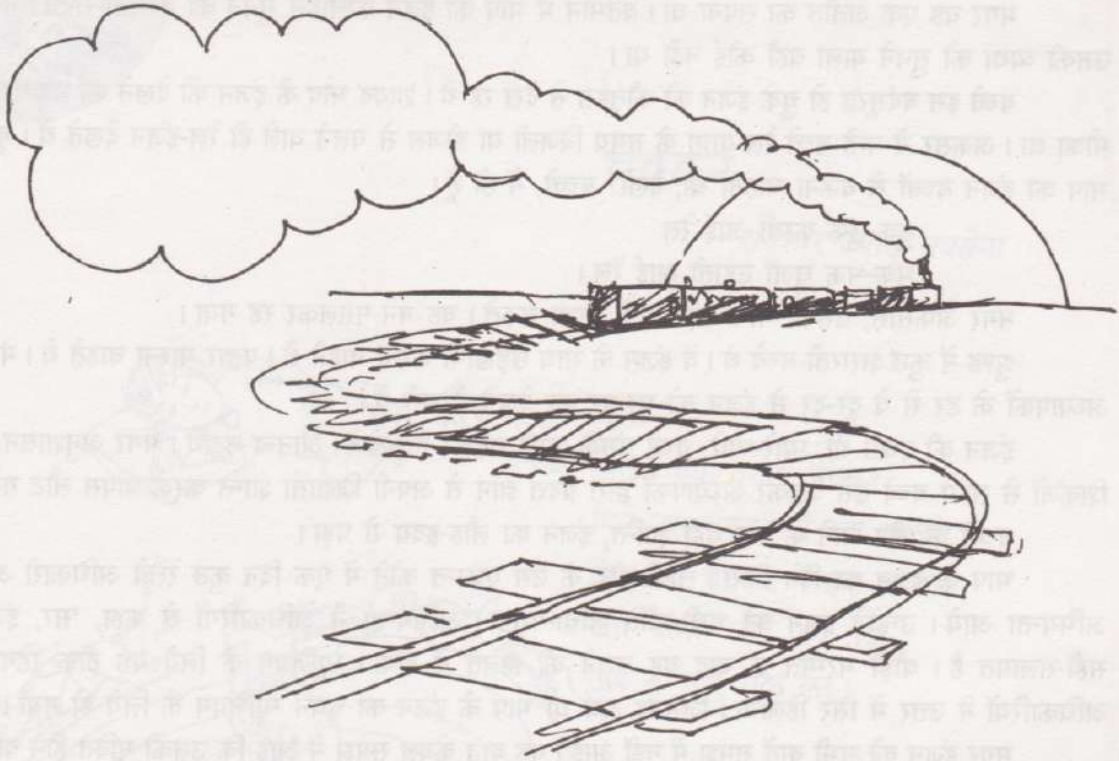
अध्यापक, बच्चों को समझा रहे थे; 'बच्चो सर्व प्रथम इग्लैण्ड में भाप के इंजन की सहायता से रेल चली थी। बाद में अपने देश में रेल भाप के इंजनों की सहायता से चलाई जाने लगी। अपने यहाँ भाप का इंजन बनाने का कारखाना चितरंजन (पश्चिम बंगाल) में बना था। मगर धीरे-धीरे रेलवे में इन इंजनों का प्रचलन समाप्ति की ओर है।'

वर्षो बाद लोंग उसको देखने आये थे। वह अपने अतीत में खो गया।

जब कभी वह अपनी छुक-छुक बन्द करके किसी स्टेशन के प्लेट फार्म पर रूकता तो आस-पास कोलाहल सुनाई पड़ने लगता।

इंजन का ड्राइवर, उसके कल-पुर्जो की जाँच करने लगता। सहायक ड्राइवर, पानी भरने के लिये इंजन के हौज पर चढ़ जाता। फायर-मैन, कोयला ब्यालर में झोंकने में लग जाता।

पीछे बोगियों में यात्रीगण उतरने-चढ़ने के लिये धक्का-मुक्की करने में व्यस्त हो जाते। कहीं से 'चाय गर्म' तो कहीं से पूड़ी-सब्जी और मिठाई बेचने वालों की तरह-तरह की आवाजें आतीं। बोगियों में खिड़की से झाकतें बच्चे मन ही मन ललचाने लगते। कुलियों को सामान उतारने चढ़ाने की तेजी रहती। इंजन के आस-पास का पूरा संसार व्यस्त रहता था। सभी को तेजी रहती।

लम्बी सीटी के साथ इंजन जब धीरे-धीरे चल पड़ता तो कोलाहल अपनी चरम स्थिति पर होता।

खोंमचावाले जल्दी-जल्दी ग्राहकों से पैसा वसूलने लगते। यात्रियों में बोगियों पर चढ़ने की होड़ लग जाती।

इन सब बातों को देखकर इंजन मन ही मन खुश होता। फिर छुक-छुक की गति बढ़ाकर तेजी से दौड़

पड़ता।

मगर यह एक अतीत का सपना था। वर्तमान में भाप का इंजन कोलाहल सुनने को तरसता रहता। मगर उसकी व्यथा को सुनने वाला वहाँ कोई नहीं था।

बच्चे इस बदसूरत हो चुके इंजन को कौतूहल से देख रहे थे। शायद भाप के इंजन को देखने का यह पहला मौका था। अकसर ये नन्हे बच्चे रेल-यात्रा के समय बिजली या डीजल से चलने वाले ही रेल-इंजन देखते थे। बूढ़ा भाप का इंजन बच्चों से कहना चाहता था, देखो! बच्चो, मैं ही हूँ।

छुक-छुक करती आई रेल
भक-भक धुआँ उड़ाती आई रेल।

मगर अफसोस, उसकी भाषा बच्चे नहीं समझ सकते। वह मन-मसलकर रह गया।

झुण्ड में कुछ शरारती बच्चे थे। वे इंजन के साथ छेड़खानी करना चाहते थे। पत्थर मारना चाहते थे। मगर अध्यापकों के डर से वे दूर-दूर से इंजन को घूर-घूर कर देखने में लगे थे।

इंजन की इच्छा थी, प्यारे-प्यारे, बच्चे उसके ऊपर चढ़कर हँसे-खेलें। आनन्द उठायें। मगर अनुशासन के शिकंजों से सहमे बच्चे उसे देखकर अध्यापकों द्वारा प्रदत्त ज्ञान से अपनी जिज्ञासा शान्त करके वापस लौट गये।

बच्चों के लौट जाने के बाद वही शान्ति, इंजन का लौह-हृदय रो पड़ा।

भाप के इंजन का दिन फिरा। लोको शेड के उस एकान्त कोने में एक दिन कुछ रेलवे अधिकारी और अभियन्ता आये। उन्होंने इंजन को भली-भाँति जाँचा-परखा। अभियन्ता ने अधिकारियों से कहा, 'सर, इंजन सही-सलामत है। थोड़ी मरम्मत के बाद यह चलने की हालत में होगा। म्यूजियम के लिये यह ठीक रहेगा।' अधिकारियों ने उत्तर में सिर हिलाया। जिसका अर्थ था भाप के इंजन का चयन म्यूजियम के लिये हो गया।

मगर इंजन को सभी बातें समझ में नहीं आई। यह बात केवल समझ में आई कि उसकी मुक्ति होने वाली है।

एक दिन मिस्त्री आये। उनके हथौड़े तथा रिंचों की आवाजों से वह एकान्त क्षेत्र गुंजायमान हो उठा। उन्होंने इंजन के कुछ कल-पुर्जो को बदला। कुछ को साफ किया। जंग खाये और धूसर हो चुके कल-पुर्जे चाँदी सा चमक उठे। इंजन की रंगाई हुई अब वह इंजन बूढ़ा नहीं युवा राजकुमार लगता। कोयला भण्डार में कोयला भरा गया। पानी हौज में पुनः तरंग लेने लगा। जब इंजन के ब्यालर में कोयला झोंका गया तब इंजन के नस-नस में भाप दौड़ने लगा। चक्के चलने के लिये मचल उठे।

कुछ दिनों बाद इंजन लोकोशेड के इस कारावास से विदा लेते हुये पटरियों पर चल पड़ा।

इंजन को रेलवे म्यूजियम (संग्रहालय) में लाया गया। वहाँ पहले से तरह-तरह की रेलवे से सम्बन्धित नयी-पुरानी चीजे रखी थी।

संग्रहालय में आकर इंजन खुश हो गया। वहाँ प्रतिदिन बच्चे आते थे। उसको देखकर कहते, देखो, यह रहा असली रेल, धुँआ उड़ाने वाला रेल।

भाप का इंजन गौरवमान हो उठता। आख़िरकार बच्चों का प्यार जो उसे मिलने लगा।

–विजय कुमार सिंह, खटीमा (उत्तरांचल)

चक्कर

- सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

आओ एक बनाएँ चक्कर
फिर उस चक्कर में इक चक्कर
फिर उस चक्कर में इक चक्कर
और बताते जाएँ जब तक
ऊब न जाएँ थक कर।

फिर सबसे छोटे चक्कर में
म्याऊं एक बिठाएँ,
और बाहरी हर चक्कर में
चूहों को दौड़ाएँ!
दौड़-दौड़ कर सभी थकें
हम बैठे मारें मक्कर,
नींद लगे हम सो जाएँ
वे देखें उझक-उझक कर।
आओ एक बनाएँ चक्कर।

नहीं काटना मुझको भाई

नहीं काटना मुझको भाई,
मैंन तुम्हें छाँह पहुँचाई।
सूरज जब ऊपर उठ जाता
राही यहाँ बैठ सुस्ताता,
मीठे फल वह मेरे खाता,
बदले में क्या कुछ दे जाता।
सेवा की है किया भलाई,
नहीं काटना मुझको भाई।

मुझसे निकली निर्मल वायु,
तुम्हें चाहिये होती।
जीवन तुम्हें उसी से मिलता,
तुम्हारी नाक, इसी लिये होती।
सेवा की है किया भलाई,
नहीं काटना मुझको भाई।

तुम मुझसे ही दवा बनाते,
बदले में मुझे क्या दे जाते?
मेरे नीचे बैठ-बैठकर,
मेरे ही तुम फल खाते।

दर्द होता है मुझको भाई,
मैंने तुम्हें छाँह पहुँचाई।
नहीं काटना मुझको भाई,
नहीं काटना मुझको भाई।

–श्वेतांशु टण्डन

नन्हीं तितली

देखो नन्हीं तितली आई
खूब सारे खिलौने लाई।
देखो नन्हीं तितली आई
खूब रंगीली है खूब छबीली
वो रस लिये आई,
देखो नन्हीं तितली आई
चमेली की महक बहुत ही न्यारी है,
तितली बहुत ही प्यारी है
हर किसी को भाती है
चमगादड़ देख छुप जाती है
नन्हीं तितली आती है
मुझे अपना मित्र बनाती है
मुझे ले जाकर डालों में,
खूब झूला झूलाती है
न किसी को काटती,
न किसी को हानि पहुँचाती है
नन्हीं तितली आती है
मन को कितना भाती है
फूलों की खुशबू लाती है
नन्हीं तितली आती है,
बैठ फूलों पर फुर्र से उड़ जाती है।

—*अमिताभ सिंह*, कक्षा-7, खटीमा

जानकारी
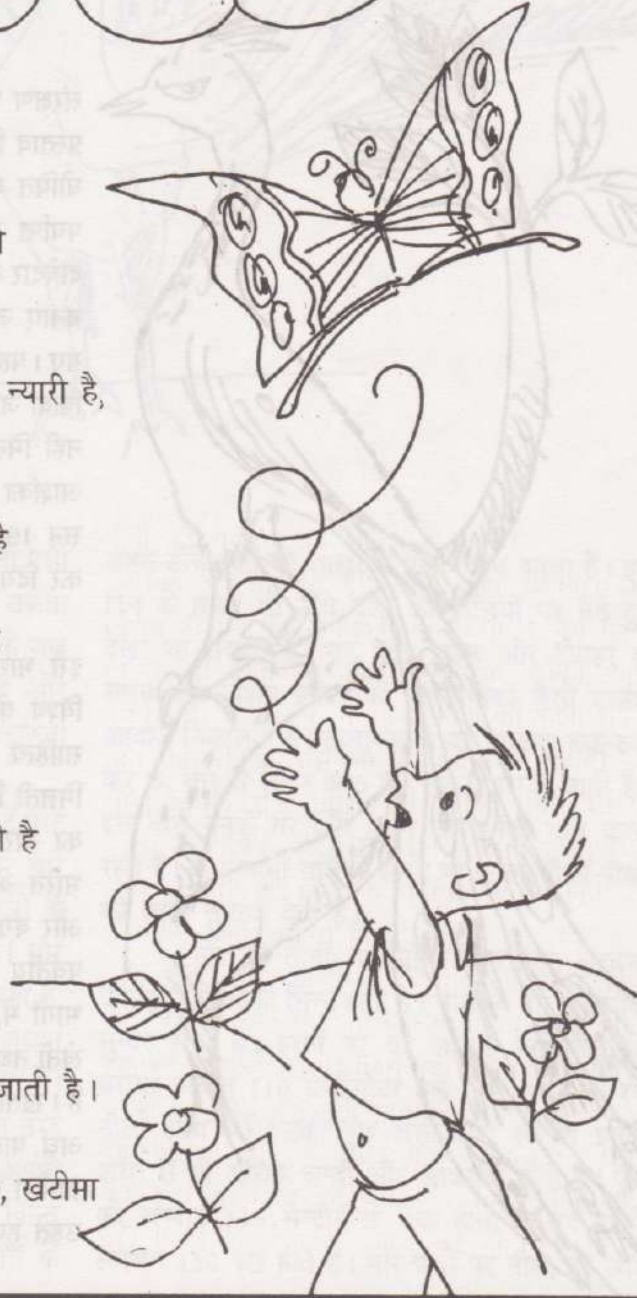
भारत का राष्ट्रीय पक्षी : मोर

सन् 1960 में टोकियो में "अन्तर्राष्ट्रीय पक्षी संरक्षण परिषद" की एक बैठक हुई। इस बैठक में यह प्रस्ताव किया गया कि प्रत्येक राष्ट्र अपना राष्ट्रीय पक्षी घोषित करे। राष्ट्रीय पक्षी के चयन के लिए राष्ट्रों को पर्याप्त समय दिया गया। भारत में मोर इस पद के दावेदार के रूप में सबसे आगे था। मोर को राष्ट्रीय पक्षी बनाए जाने के विपक्ष में मुख्य रूप से तीन तर्क दिए गए। पहला—मोर पहले ही बर्मा का राष्ट्रीय पक्षी घोषित किया जा चुका था। दूसरा—यह भारत के सभी भागों में नहीं मिलता और तीसरा—इसके विलुप्त होने की कोई आशंका नहीं थी इसके बावजूद भी भारत सरकार ने सन् 1963 में मोर को भारत का राष्ट्रीय पक्षी घोषित कर दिया।

मोर रंग बिरंगे पंखों वाला एक सुन्दर पक्षी है। इसे भारत का राष्ट्रीय पक्षी होने का गौरव प्राप्त है। विश्व के अधिकांश देशों के धार्मिक साहित्य, लोक साहित्य एवं मिथ साहित्य में मोर की चर्चा पढ़ने को मिलती है। इसकी तीन जातियाँ हैं—भारतीय मोर, बर्मा का मोर तथा अफ्रीका का कांगो मोर। भारतीय मोर भारत के अधिकांश भागों के साथ ही साथ श्रीलंका और बंगला देश में भी पाया जाता है। यह हिमालय के पर्वतीय क्षेत्रों में दो हजार मीटर तक की ऊँचाई वाले भागों में, मैदानों, पतझड़ एवं घनी झाड़ियों वाले वनों, खेतों तथा ग्रामीण बस्तियों के निकट बहुतायत से मिलता है। खेतों और ग्रामीण बस्तियों के निकट रहने वाले मोर अर्ध पालतू हो जाते हैं और कभी-कभी निडर होकर ग्रामीण बस्तियों के भीतर और मकानों की छतों पर भी उड़ते हुए आ जाते हैं।
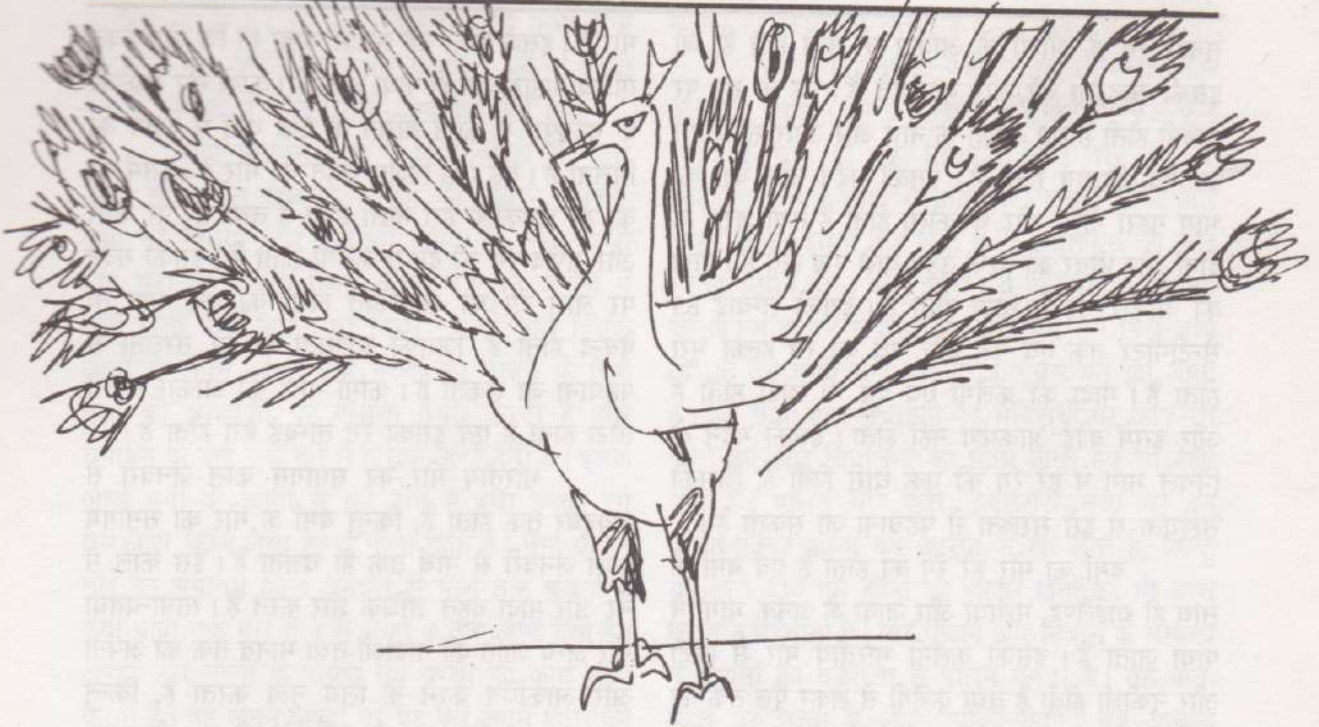
मोर हमेशा सचेत रहने वाला एक शर्मीला पक्षी है तथा इसे बड़ी सरलता से पालतू बनाया जा सकता है। यह नदियों, तालाबों, झरनों या इसी प्रकार के जल स्रोतों के निकट रहना अधिक पसन्द करता है और अपने निवास के पास के जल स्रोत शीघ्र ही ढूँढ़ निकालता है।

मोर अकेले विचरण करता है और छोटे-छोटे समूहों में भी। इसके समूह में प्रायः एक नर और चार मादाएँ होती हैं, किन्तु कभी-कभी नर और मादाओं के अलग-अलग झुण्ड भी देखने को मिल जाते हैं। मोर प्रायः घने वृक्षों की छाया में भूमि पर विचरण करता है, किन्तु किसी अजनबी के निकट आ जाने पर अथवा नदी नाले आदि पार करने के लिये उड़ान भी भरता है। इसकी उड़ान सीधी होती है, अर्थात् यह राकेट की तरह सीधी स्थिति में ऊपर उठता है। इसके बाद अपनी लम्बी पूँछ की सहायता से गति प्राप्त करता है, किन्तु इसकी उड़ान अधिक लम्बी नहीं होती। मोर रात्रि के समय ऊँचे वृक्षों की शाखाओं पर विश्राम करता है। इसे दिन के समय भी ऊँचे वृक्षों की डालियों पर बैठे हुए देखा जा सकता है। यह प्रातः काल और दोपहर के समय एक विशेष प्रकार की पीकों-पीकों जैसी कर्कश आवाज निकालता है। सामान्यतया यह आवाज रुक-रुक कर छः बार से लेकर आठ बार तक दुहरायी जाती है। इस बीच इनके सर और गर्दन ऊपर-नीचे गति करते रहते हैं। कभी-कभी रात्रि के समय भी इनकी पीकों-पीकों की ध्वनि सुनायी देती हैं।

मोर की तीनों जातियों की शारीरिक संरचना एक दूसरे से काफी भिन्न होती है। भारतीय मोर सर्वाधिक सुन्दर होता है। इसमें नर की लम्बाई बड़े गिद्ध के बराबर अर्थात् 110 सेन्टीमीटर तक तथा शरीर का रंग नीला होता है। इसकी पूँछ असाधारण रूप से इसके शरीर से भी अधिक लम्बी और आकर्षक होती है। पूँछ की लम्बाई 115 सेन्टीमीटर तक होती है एवं इसमें लगभग 150 पंख होते हैं। मोर पंखों पर नीले, हरे और

सुनहरे रंग के आँखों के आकार के गोले होते हैं, जो इसकी सुन्दरता को और बढ़ा देते हैं। नर के सर पर कलँगी होती है एवं आँखों के नीचे और ऊपर सफेद रंग का एक निशान होता है। इसकी गर्दन और वक्ष का भाग गहरा नीला और चमकीला होता है तथा शरीर के दोनों ओर भीतर की तरफ उड़ने वाले पंख होते हैं। मादा का आकार नर से छोटा होता है। इसकी लम्बाई 85 सेन्टीमीटर तक एवं गले और वक्ष का रंग हल्का भूरा होता है। मादा की कलँगी एवं दुम भी छोटी होती है और इसमें कोई आकर्षण नहीं होता। इसकी गर्दन के निचले भाग में हरे रंग की एक धारी होती है, जिसकी सहायता से इसे सरलता से पहचाना जा सकता है।

बर्मा का मोर हरे रंग का होता है एवं बर्मा के साथ ही थाईलैण्ड, मलाया और जावा के अनेक भागों में पाया जाता है। इसकी कलँगी भारतीय मोर से छोटी और नुकीली होती है तथा कलँगी से लेकर पूँछ तक का रंग चमकीला हरा होता है। बर्मा के मोर के पंख भारतीय मोर के समान होते हैं, किन्तु इनका रंग काला होता है। इसका प्रजनन एवं बच्चों का पालन-पोषण भारतीय मोर के समान होता है।

अफ्रीका के कांगो मोर की खोज सन् 1936 में हुई। यह एशिया के बाहर पाया जाने वाला एक मात्र मोर है। इसके पहले यह समझा जाता था कि मोर केवल एशिया महाद्वीप में ही पाया जाता है। कांगो मोर अफ्रीका के मध्यपूर्व में कांगो बेसिन के वर्षा वनों में देखने को मिलता है। यह एक विशेष जाति का मोर है। इसमें नर का रंग चमकीला हरा नीला होता है तथा सर पर काले और सफेद रंग की दोहरी कलँगी होती है। इसकी गर्दन पर लाल रंग की अतिरिक्त त्वचा का एक भद्दा सा पैबन्द होता है, जिसकी सहायता से इसे सरलता से पहचाना जा सकता है। कांगो मादा का आकार नर से छोटा होता है एवं इसका रंग ताम्बई हरा होता है।

भारतीय मोर का समागम काल जनवरी से अक्टूबर तक होता है, किन्तु बर्मा के मोर का समागम काल जनवरी से मार्च तक ही चलता है। इस काल में नर और मादा बहुत अधिक शोर करते हैं। सामान्यतया मोर अन्य जाति की मादाओं तथा मानव तक को अपनी ओर आकर्षित करने के लिये नृत्य करता है, किन्तु समागम काल में यह अपने पंखों को पूरी तरह फैला कर बड़ा ही लुभावना नृत्य करता है। इस समय यह कभी पंखों को कम्पित और स्पंदित करता है तो कभी पूरी तरह शरीर को हिलाकर पंखों को खड़खड़ाता है। इसके साथ ही यह मादा को मोहित करने के लिये पंख ऊपर उठा कर गर्व से चलता है। एवं विशेष प्रकार के हाव-भाव
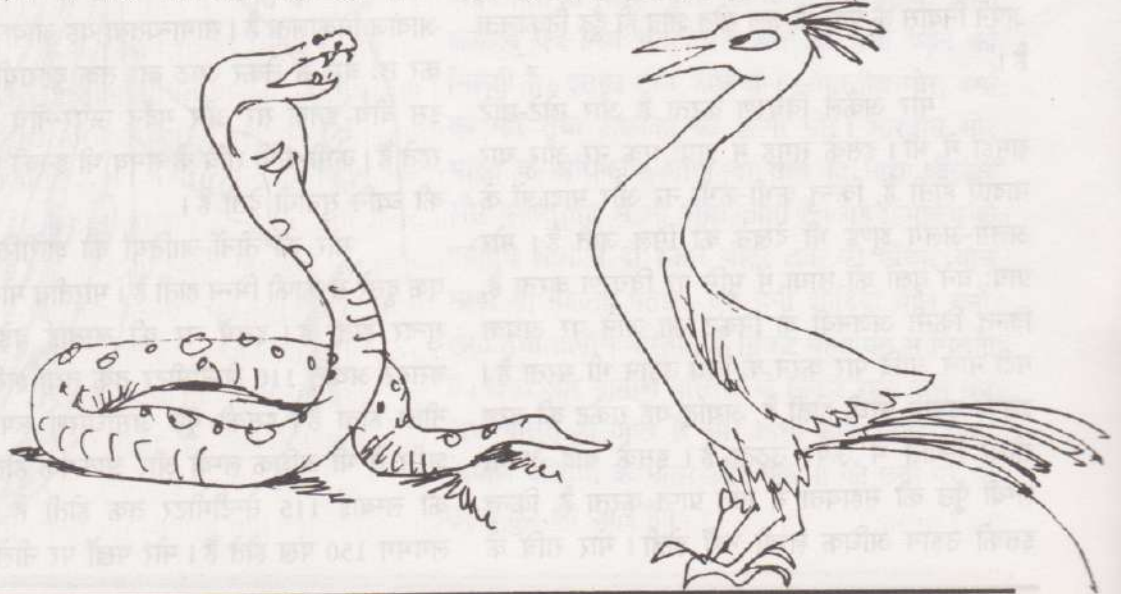
प्रदर्शित करता है। नर से प्रभावित होकर कभी-कभी मादा भी नृत्य करने का प्रयास करती है, किन्तु लम्बी पूँछ के अभाव में उसका नृत्य आकर्षक नहीं होता।

मादा समागम काल में किसी झाड़ी के भीतर थोड़ी सी जमीन खोदकर कागज की कतरन, छीलन, वृक्षों की पत्तियों और टहनियों आदि की सहायता से एक भद्दा-सा घोंसला तैयार करती है। घने जंगलों में रहने वाली मादा जमीन पर विचरण करने वाले हिंसक जीवों से अपने अण्डों और बच्चों को बचाने के लिये वृक्षों की शाखाओं पर घोंसला तैयार करती है और समागम के बाद एक बार में 5 तक अण्डे देती है। इसके अण्डे मुर्गी के अण्डों से बड़े होते हैं तथा इनका रंग चमकीला, क्रीम जैसा हल्का पीला होता है। बर्मा के हरे मोर का समागम काल जनवरी से मार्च तक चलता है तथा मादा एक बार में 4 से लेकर 8 तक अण्डे देती है। अण्डों और बच्चों के पोषण एवं सुरक्षा का कार्य मादा करती है। वह अपने अण्डों पर बैठ कर अपने शरीर की गर्मी से उन्हें सेती है। लगभग एक माह में अण्डों से बच्चे निकल आते हैं। जन्म के समय ये बहुत छोटे होते हैं एवं इनका रंग हल्का भूरा होता है।

मोर के बच्चों का विकास बहुत धीमी गति से होता है, अतः इन्हें जंगली बिल्ली, चील और गिद्ध जैसे हिंसक जीवों से बचाने के लिये मादा को सदैव सावधान रहना पड़ता है। मादा अपने बच्चों की केवल सुरक्षा ही नहीं करती, बल्कि अपनी चोंच में भोजन लाकर इन्हें खिलाती भी है और तरह-तरह के प्रशिक्षण देती है। कभी-कभी एक वर्ष तक की आयु की मादाएँ एक विशेष खेल खेलती हैं। ये आठ-दस की संख्या में किसी झाड़ी या वृक्ष के निकट एकत्रित हो जाती हैं और तेजी से एक दूसरे का पीछा करते हुए इसके चक्कर काटती हैं। चक्कर काटते समय ये एक दूसरे के आगे निकलने का प्रयास भी करती हैं। अचानक किसी अदृश्य संकेत से सभी मादाएँ रुक जाती हैं और तेजी से इधर-उधर बिखर जाती हैं। इस अद्भुत खेल में प्रायः एक-दो प्रौढ़ मादाएँ भी सम्मिलित हो जाती हैं, किन्तु प्रौढ़ नर अपवाद स्वरूप ही देखने को मिलते हैं।

मोर एक सर्वभक्षी पक्षी है। यह विभिन्न प्रकार के बीज, अनाज के दाने, वृक्षों की कोपलें, फल-फूल आदि के साथ ही चूहे, छिपकली तथा तरह-तरह के कीड़े-मकोड़े बड़े स्वाद से खाता है। इसकी दृष्टि और श्रवण शक्ति इतनी तेज होती है कि आसपास की कोई भी खाने-पीने योग्य वस्तु इससे बच नहीं पाती। यह सर्प को अपना दुश्मन समझता है। यदि इसे सर्प मिल जाये तो यह उसे कभी नहीं छोड़ता और मार कर खा जाता है। इसे प्रायः हवा में उड़ती हुई मक्खियों पर आक्रमण करते हुए और तितलियों का पीछा करते हुए भी देखा गया है। पालतू मोर रोटी, डबलरोटी तथा घर का कच्चा-पक्का खाना बड़े आराम से खा लेता है, किन्तु यह ताजे बोये गये बीजों को खाकर खेतों को भी बहुत नुकसान पहुँचाता है। मोर भोजन और निवास के सम्बन्ध में नियमों का कठोरता से पालन करता है। यह प्रातः काल उठ जाता है और "पीकों-पीकों" की आवाज निकालता है तथा भोजन की तलाश में वृक्षों से नीचे उतर आता है। यह केवल सुबह-शाम ही भोजन करता है तथा एक निश्चित क्षेत्र में भोजन करता है। इसके रहने, सोने, धूप खाने तथा घूमने-फिरने के भी निश्चित स्थान होते हैं एवं सामान्यतया यह इनमें परिवर्तन नहीं करता।

मोर जंगल में रहने वाले जीवों का मित्र है। यह अपनी दृष्टि और श्रवण शक्ति तीव्र होने के कारण आसपास हिंसक पशुओं की उपस्थिति शीघ्र मालूम कर लेता है और अपनी जोरदार कर्कश आवाज से सभी को सावधान कर देता है। इसके इसी गुण के कारण अनेक आदिवासी समुदायों में इसे मारना पाप समझा जाता है। गुजरात और राजस्थान के अनेक भागों में भी धार्मिक महत्व का पक्षी होने के कारण इसे नहीं मारते, किन्तु कुछ जन जातियों में माँस और मोर पंखों के लिये इसका निर्दयतापूर्वक शिकार किया जाता है।

—डॉ. परशुराम शुक्ल, दतिया (म.प्र.)

ज्ञान विज्ञान

आसमान नीला क्यों दिखाई देता है?

आसमान हमें नीला दिखता है, क्योंकि सूरज से आने वाला प्रकाश हवा, धूल और पानी के छोटे-छोटे कणों द्वारा बिखर कर फैल जाता है। अन्य सफेद प्रकाशों की तरह सूरज का प्रकाश भी स्पेक्ट्रम के सभी रंगों से मिल-जुल कर बना होता है। ये ही रंग है जो हम इन्द्रधनुष में देखते हैं। अगर आप इन सभी रंगों वाली किरणों को लेकर उन्हें मिला दें तो सफेद प्रकाश प्राप्त होगा।

प्रकाश के विषय में बहुत-सी ऐसी बातें हैं जिनकी जानकारी अभी हमें प्राप्त करनी है। इतनी बात प्रायः निश्चित है कि प्रकाश की प्रकृति कुछ-कुछ तरंगों जैसी है। दूसरे शब्दों में प्रकाश की लहरें चारों तरफ फैलती हैं, करीब-करीब ऐसी ही जैसे किसी तालाब में आप पत्थर फेंकने के बाद लहरों को उठती हुई देखते हैं। अलग-अलग रंगों की किरणें अलग-अलग लम्बाइयों की लहरो में (वेवलेंग्थ) चलती हैं। नीली किरणों की लहरें लाल या नारंगी किरणों की लहरों से काफी छोटी होती हैं।

जब सूरज का प्रकाश पृथ्वी के वायुमंडल से होकर गुजरता है और हवा में उड़ते हुए छोटे-छोटे कणों से टकराता है तो नीले रंग की किरण की लहर की लम्बाई ठीक उतनी ही होती है कि ये कण उसे रोककर विखेर दें। लाल या नारंगी रंग की किरणें अधिक लम्बी लहरों की होने के कारण वायुमंडल के आरपार सीधी गुजर जाती हैं। नीली किरणों के विखरने के कारण ही आसमान नीला दिखाई देने लगता है। इसके अलावा यह बात भी है कि इस किरण के आसमान में ही बिखर जाने के कारण यह सूरज के प्रकाश के एक अंश के रूप में हमारी आंखों तक नहीं पहुंच पातीं। अतः सूरज हमें उससे कुछ अधिक ही पीला दिखाई देता है, जितना कि वह है। कारण सिर्फ यही है कि नीला प्रकाश पीछे आसमान में ही छूट जाता है।

सुबह शाम को , सूरज के उगते या डूबते समय, आपने आकाश में प्रायः लाल और नारंगी रंग की छटा देखी होगी। इस समय सूरज की रोशनी को दूसरे समयों की अपेक्षा वायुमंडल की ज्यादा मोटी परतों में से गुजरना पड़ता है। फिर जमीन के नजदीक पहुंचकर यह प्रकाश धूल के और भी अधिक कणों से टकराता है और तब लाल और नारंगी रंग की लहरें भी बिखर जाती हैं।

आसमान में हमें जो भी रंग दिखाई पड़ता है, अक्सर वह प्रकाश और वायुमंडल के कारण ही दिखाई पड़ता है। यदि वायुमंडल बिलकुल ही न होता तो आसमान गहरे काले रंग का होता, फिर भी बिना किसी वायुमंडल के भी, आसमान में कुछ-न-कुछ रंग अवश्य होते। आसमान में जो तारे हैं उनका रंग नीला, लाल या पीला जो भी है, वे अपने रंग को कायम रखते हैं, क्योंकि उनके रंग हमारी पृथ्वी के वायुमंडल के कारण नहीं हैं।

मुल्ला नसीरूद्दीन के किस्से

सोने की खेती

• श्ये तफ़ङ
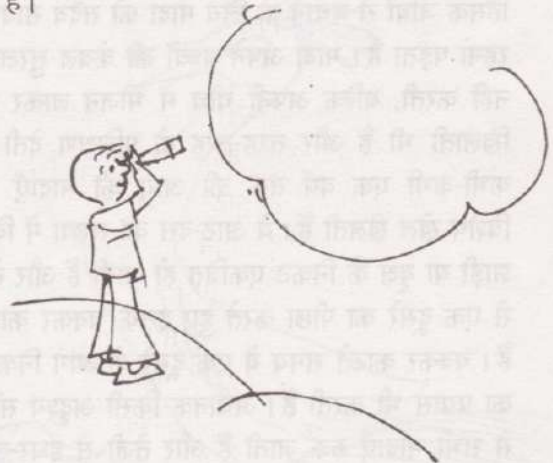
एक लालची बादशाह ने देखा कि मुल्ला नसीरूद्दीन बलुआ जमीन पर बैठा सोने के टुकड़े छान रहा है तो उसने हैरानी से पूछा, ''तुम क्या कर रहे हो?''

मुल्ला नसीरूद्दीन ने जवाब दिया, ''जहांपनाह, मैं सोने के बड़े टुकडे चुन रहा हूँ, फिर उन्हें बोऊंगा। शायद जोरदार फसल होगी!'' यह सुनकर बादशाह ने और भी ताज्जुब से पूछा, ''मेरे दानिशमंद मुल्ला नसीरूद्दीन, मुझे जल्दी बताओ, सोना बोने से तुम्हें क्या फायदा होगा?''

मुल्ला नसीरूद्दीन ने मुस्कराते हुआ कहा, ''आप यह भी नहीं जानते? आज मैं एक औंस सोना बोऊं तो बाद में मुझे लगभग दस औंस सोना जरूर मिलेगा।'' बादशाह के मुँह से लार टपकने लगी और उसने कहा, ''मुल्ला नसीरूद्दीन भाई, मैं तुम्हारा साझेदार बन जाता हूँ। फसल का अस्सी फीसदी मुझे दे देना, क्योंकि जमीन मेरी है। मंजूर है?''

मुल्ला नसीरूद्दीन ने खुशी से जवाब दिया, ''ठीक है जहांपनाह, मुझे मंजूर है!'' मुल्ला नसीरूद्दीन के बदल जाने के डर से बादशाह उसे काजी के यहाँ ले गया। काजी ने फैसला सुनाया, ''मुल्ला नसीरूद्दीन सोना जहां चाहे बो सकता है। पर अगले हफ्ते उसे बादशाह को आठ औंस सोना जरूर देना पड़ेगा।''

एक हफ्ते बाद मुल्ला नसीरूद्दीन नें बादशाह को आठ औंस सोना पहुँचा दिया। सोने की चमचमाती फांकें देखकर बादशाह का दिल बांसों उछलने लगा।

बादशाह ने मुल्ला नसीरूद्दीन के पीछे दौड़ते हुए कहा, ''मुल्ला नसीरूद्दीन, तुम सोना बोने में माहिर हो! यह आठ औंस सोना अपने दो औंस के साथ बो देना। अगली बार तुम्हें आठ चिन सोना मुझे देना होगा। याद रखना!'' मुल्ला नसीरूद्दीन ने कहा, ''अच्छा! बादशाह, फिक्र न करें। अगले हफ्ते मैं आपको इससे एक भी औंस कम नहीं दूंगा!''

एक हफ्ते बाद बादशाह को आठ चिन सोना मिला तो उसने खुशी से कहा, ''मुल्ला नसीरूद्दीन, तुमने जयादा सोना क्यों नही बोया!'' मुल्ला नसीरूद्दीन ने जवाब दिया, ''मेरे पास ज्यादा सोना नहीं है!''

यह सुनकर बादशाह ने फौरन अफसरों को हुक्म दिया और उन्होंने शाही खजाने से दो बक्स सोना मुल्ला नसीरूद्दीन को दिया। बिदा करते समय बादशाह ने फिर यह अनुरोध किया, ''मुल्ला नसीरूद्दीन, याद रखना! इस बार दो बक्स सोना दिया है। अगले हफ्ते तुम्हें मुझे सोलह बक्स सोना देना होगा, उससे एक भी औंस कम नहीं!''

तीसरे हफ्ते में मुल्ला नसीरूद्दीन मुंह लटकाकर खाली हाथ बादशाह के यहां पहुंचा। उसे देखते ही बादशाह ने खुशी से उछलते हुए पूछा, ''प्यारे मुल्ला नसीरूद्दीन, सोना ढोने वाली गाड़ियों का काफिला कहां है?'' मुल्ला नसीरूद्दीन ने रोते हुए कहा, मेरी तो किस्मत ही फूट गई! इस बीच एक भी बूंद पानी नहीं पड़ा और सारी फसल सूख गई। फसल तो दूर रही, बीज से भी हाथ धोने पड़े!''

यह सुनकर बादशाह गुस्से से पागल हो उठा और गरजकर बोला, ''तुम सफेद झूठ बोल रहे हो! क्या कहीं सोना भी सूख सकता है?'' मुल्ला नसीरूद्दीन ने कहा, ''मेरी बातों पर विश्वास नहीं, तो काजी को बुलाइए!'' बादशाह ने फौरन काजी को बुलवाया। काजी ने कहा, ''झूठे को सजा जरूर दी जाएगी।''

मुल्ला नसीरूद्दीन ने कहा, ''आप बादशाह से पूछें अगर उसे सोना सूखने पर यकीन नहीं तो सोना की जमीन में बोआई ओर उसकी फसल काटी जा सकने पर कैसे यकीन हो गया?'' यह सुनकर बादशाह अवाक रह गया, जैसे उसके मुंह में किसी ने मिट्टी का लोंदा ठूँस दिया हो।

मुल्ला नसीरूद्दीन ने दस़ गुना के हिसाब से उन आदमियों को सोना वापस दिया, जिनसे उसने सोना उधार लिया था। उन सभी ने खुशी में नाचते-गाते हुए कहा, ''शुक्रिया, मुल्ला सीरूद्दीन!'शुक्रिया, मुल्ला नसीरूद्दीन!''

ज़रा हँस लें

चुटकुले

1. बच्चा- माँ मास्टर जी को कुछ नहीं आता।
माँ- वो कैसे।
बच्चा- क्योंकि कल मास्टर जी कह रहे थे कि दो और तीन पाँच होता है और आज कह रहे थे कि चार और एक पाँच होता है।

2. पत्नी- मेरे पास शूट है पर साड़ी नहीं, मेरे पास पाउडर का डिब्बा है पर पाउडर नहीं, टाइम है पर घड़ी नहीं।
पति- मेरे पास पर्स है पर रुपये नहीं।

4. अंधी- मुझे एक फूल दिख रहा है।
लगड़ी- मैं दौड़ कर तोड़ लाती हूँ।
गंजी- मैं उसे अपने बालों में लगा लूँगी।

5. एक पागल- मैं थोड़े दिनों बाद दुनिया को मिटा दूँगा।
दूसरा पागल- मैं तुझे रबड़ दूँगा ही नहीं तो दुनिया को कैसे मिटाएगा।

संकलन—*अमिताभ सिंह,* खटीमा

2. भिखारी- बाबूजी एक पैसा दे दो।
आदमी- एक पैसा नहीं है।
भिखारी- तो रोटी दे दो।
आदमी- रोटी भी नहीं है।
भिखारी- तो चलो मेरे साथ भीख माँगो।

4. सोना- रामू तुम शेर की गुफा में अन्दर जाकर जिन्दा बाहर आ सकते हो!
रामू- हाँ, लेकिन गुफा के अन्दर शेर न हो।

—*पिंकी सैनी,* रुद्रपुर

पहेलियाँ

1. एक ऐसी गाय जो काली घास खाए
लाल पानी पीये और दूध न दे।

2. जलता हूँ मैं भाप के इंजन के लिए
जलता हूँ मैं गरीबों के चूल्हों में,
पावन हूँ मैं भाप के इंजन के लिए,
तुच्छ हूँ मैं डीजल इंजन के लिए।

3. एक ऐसा फकीर,
जिसके पेट में लकीर।

4. एक ऐसी मशीन, जो गर्म चीज ठंडा करें,
चाहे तो तुम बर्फ जमाओ
यह मशीन अमीरों के घरों में होती है।

5. मैं एक मशीन, जो बिना इंजन पेट्रोल
बिना भाप तथा बिन बिजली के चलूँ
मैं खीचने से काम करूँ
खेत जोतने में किसान की मदद करूँ।

6. दो अक्षर का मेरा नाम
उल्टा सीधा एक समान।

उत्तर—1. जूँ, 2. कोयला, 3. गेहूँ, 4. फ्रिज, 5. हल, 6. पापा।

—*अमिताभ सिंह*, खटीमा।

अनुराग बाल कम्यून के सांस्कृतिक कार्यक्रम की रिपोर्ट
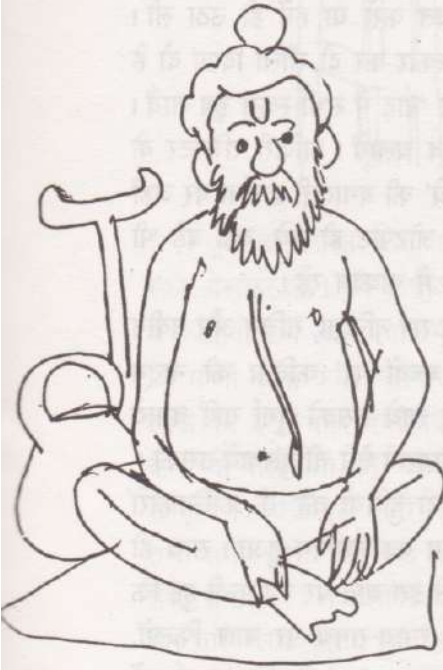
...वो सुबह हमीं से आयेगी

गोरखपुर

प्रेमचन्द की 125वीं जयंती के अवसर पर अनुराग ट्रस्ट की ओर से बच्चों की सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया। इस मौके पर अनुराग बाल कम्यून के बच्चों ने बालमन की कोमल संवेदना, उसका अद्भुत आत्मत्याग और रिश्ते की मानवीयता को स्थापित करती प्रेमचन्द की कहानी 'इर्दगाह' की नाट्य प्रस्तुति की। आज के जीवन में जबकि आपसी रिश्ते आना-पाई के बर्फीले पानी के नीचे ठिठुरे हुए पड़े हों, प्यार और कुर्बानी के रिश्ते की आँच को अपने जीवन्त अभिनय से महसूस कराते बाल कम्यून के बच्चों ने खासकर हामिद के रूप में सचिन और अमीना दादी के रूप में स्मृति ने न केवल बड़े दर्शकों की सराहना पाई बल्कि बच्चों पर भी अपना प्रभाव छोड़ा, जो नाटक के अंतिम दृश्य को जब हामिद मेले से चिमटा लेकर दादी के पास लौटता है, बिल्कुल शांत होकर टकटकी बाँधे देख रहे थे। मेले के दृश्य की बच्चों के सहज और मजेदार प्रस्तति ने सभी को खूब गुदगुदाया।

"जब पाप घरौंदे फूटेंगे, जब जुल्म के बंधन टूटेंगें, उस सुबह को हम ही लायेंगे, वो सुबह हमीं से आयेगी" कार्यक्रम की शुरुआत इस क्रान्तिकारी गीत से करके बच्चे मानों हमें आश्वस्त कर रहे थे कि चीजें बेहतर होंगी और उसे बेहतर वे ही बनायेंगे।

मुक्तिबोध की कविता 'ऐ इन्सानों ओस न चाटो' की गीत प्रस्तुति और 'रोटी तुमको राम न देगा। वेद तुम्हारा काम न देगा। जो रोटी का युद्ध करेगा। वह रोटी को आप वरेगा' लोगों ने बहुत मनोयोग से सुना और सराहा।

कम्यून की दीक्षा की 'हे ईश्वर या तो इस जगत को स्कूलों से मुक्त करो या हमें ही उठा लो। 'किडनैप' करा दो। चमत्कार कर दो लीला दिखा दो हे प्रभु अन्नदाता' और फिर 'बाढ़ में सभी स्कूल डूब जायें। वहाँ हम कागज की नाव चलायें। हाजिरी रजिस्टर के पन्ने फाड़कर पतंग उडाये' की बगावती प्रार्थना पर जहाँ एक ओर बच्चे हँसी से लोटपोट हो गये, वही बड़े भी अपनी मुस्कुराहट दबाने में नाकाम रहे।

सबसे आकर्षक रहा नन्दिता, सचिन और नवीन की 'कौन गिराये बम बच्चों पर' कविता की नाट्य प्रस्तुति—'चलो पकड़कर लाये उसको मुर्गा यहीं बनाये उसको जंग सोचकर भी घबराये ऐसे चीं बुलवाये उसको।'

'तस्वीर बदल दो दुनिया की' के क्रान्तिकारी आह्वान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। साथ ही मोहल्ले के अन्य बच्चों से इस बात पर रजामन्दी हुई कि यहाँ संस्कृति कुटीर में, समय-समय पर बाल फिल्मों, नाटकों व कार्यशालाओं तथा अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन वे अनुराग बाल कम्यून के बच्चों के साथ मिलकर करते रहेंगे। कार्यक्रम का संचालन सुश्री मीनाक्षी ने किया।

पुस्तक और पोस्टर प्रदर्शनी भी इस सांस्कृतिक संध्या का आकर्षण रहे। इस अवसर पर डॉ. परमानन्द, कथाकार मदनमोहन, कपिलदेव, बादशाह हुसैन रिज़वी, प्रोफेसर जे.पी. चतुर्वेदी आदि कई गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

अनुराग बाल कम्यून के बच्चों की कलम से

प्यारे दोस्तो,

अनुराग बाल पत्रिका के पिछले अंकों में तुमने 'अनुराग ट्रस्ट' के बारे में पढ़ा होगा। यह संस्था बच्चों के स्वस्थ सांस्कृतिक और वैज्ञानिक विकास लिए बहुत से काम करती है। इन्हीं में से एक है अनुराग बाल कम्यून। यहाँ कई बच्चे एक साथ रहते हैं, पढ़ते हैं, नई-नई बातें सीखते हैं और एक स्वतंत्र माहौल में भविष्य के स्वतंत्र और जिम्मेदार नागरिक बनने की राह पर शुरुआती कदम रखते हैं। अभी गोरखपुर में चल रहे ऐसे कम्यून में रहने वाले बच्चों ने अपने कुछ मजेदार अनुभव लिखकर भेजे हैं। तुम लोग भी ऐसी चीजें लिखकर भेज सकते हो। – सम्पादक
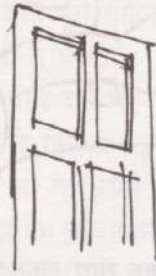
मम्मी वाला कमरा

एक बार भारत और पाकिस्तान का मैच चल रहा था। तो चाचाजी ने मुझ से कहा कि जा टी.वी. चलाकर स्कोर देखकर आ। मैंने चाचाजी से पूछा कि चाचाजी टी.वी. किस कमरे में है। चाचाजी ने कहा कि मम्मी वाले कमरे में है टी.वी.। मैं आगे गया। मुझे मम्मी वाला कमरा कहीं भी नजर नहीं आ रहा था। मैंने सोचा कि कैसे पता लगाए कि मम्मी वाला कमरा कौन-सा है। फिर मैंने सोचा कि मम्मी वाले कमरे में मम्मी जरूर मिलेंगी मैंने हर कमरे में झाँक कर देखा मगर मम्मी किसी भी कमरे में दिखाई नहीं दे रही थी। फिर मुझे एक कमरा दिखाई दिया। मैं उस कमरे के पास गया। मैं ज्यों ही कमरे में झाँकने लगा तभी समीर बोला कि इस कमरे में मत जाओ मैंने आश्चर्य से पूछा कि क्यों इस कमरे में क्या टाईम बॉम है कि मैं अगर इस कमरे में गया तो वह टाईम बॉम फट जाएगा, तभी समीर बोला अरे भाई यह मम्मी का कमरा है। मैं गुस्से में बोला कि मुझे मम्मी वाला कमरा ही तो चाहिए। तभी समीर वहाँ से चला गया। मैं अन्दर उस कमरे में घुस गया। फिर मैंने सोचा कि मम्मी इस कमरे में कहाँ है। मैंने चारों तरफ देखा। मुझे एक दरवाजा नज़र आया। मैं उस दरवाजे को खोल कर अन्दर घुस गया मुझे मम्मी उस कमरे में भी नहीं मिली मम्मी तो मिली नहीं मगर मुझे एक बिल्ली मिली वह बिल्ली बाहर को दौड़ गई मैं भी उस बिल्ली के पीछे भागा वह बिल्ली कहीं जाकर छिप गई। फिर मैंने दीदी से पूछा कि दीदी मम्मी वाले कमरे में मम्मी क्यों नहीं रहती हैं। वहाँ पर तो एक बिल्ली रहती है। फिर दीदी ने बताया कि मम्मी पहले उस कमरे में रहती थी। इसलिए उस कमरे का नाम मम्मी वाला कमरा पड़ गया है और फिर मैं जान गया कि मम्मी वाले कमरे का नाम मम्मी वाला कमरा क्यों पड़ा।
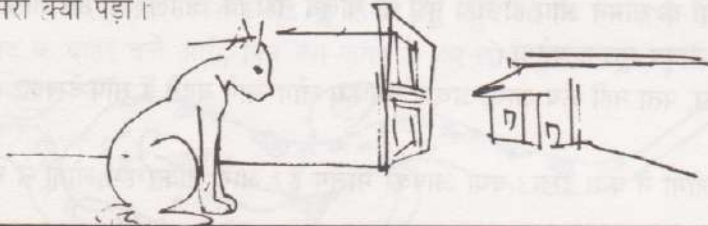
–नवीन कुमार
अनुराग बाल कम्यून
गोरखपुर

चिड़ियाघर की यात्रा

कार्यशाला शुरू होने से पहले कार्यशाला में भाग लेने के लिए कई जगह के बच्चे एक साथ इकट्ठा हुए थे। कार्यशाला के आखिरी दिन सभी बच्चों को घूमने का अवसर मिला। सभी बच्चे एक साथ घूमने निकले। रास्ते में लखनऊ शहर को देखते हुए जा रहे थे।

वहाँ पर आए सभी बच्चों में कुछ ने लखनऊ शहर को देखा था, कुछ ने नहीं देखा था।

हम सभी लोग घूमते-घूमते लखनऊ के चिड़ियाघर जा पहुँचे। चिड़ियाघर का बहुत ही शानदार दृश्य था। एक बहुत बड़ा-सा गेट—जिससे कुछ लोग बाहर आ रहे थे। कुछ लोग अन्दर जा रहे थे। अन्दर जाने वाले लोगों में से हम लोग भी थे। अन्दर जाते ही सबसे पहले हम लोगों ने मिट्टी के बने बड़े-बड़े जानवर देखे—उनको देखकर ऐसा लगा कि सभी जानवर ऐसे ही होंगे। पर लोग तो कहते हैं कि चिड़ियाघर में सचमुच के जानवर होते हैं पर ये सब तो नकली जानवर हैं। यह सोचते-सोचते हम लोग आगे बढ़े, आगे जाकर हम लोगों को साँप घर दिखा, हम लोग अन्दर गये, अन्दर जाते ही बड़ी-बड़ी घास दिखाई दी मुझे लगा कि इसी घास के अन्दर नकली साँप होंगे। आगे गये, आगे जाकर देखा साँप जाली के अन्दर बन्द थे। बिल्कुल असली।

क्या भयंकर साँप थे, ऐसे साँप पहले नहीं देखे थे लेकिन सभी साँपों को देखने के बाद पता चला कि उनमें से कुछ साँप पहले भी देखे थे। हम लोग आगे बढ़ते जा रहे थे, आगे जाकर हम लोगों ने अजगर देखा, पहले छोटे-छोटे और मोटे-मोटे, फिर हमें एक और अजगर मिला, वह इतना बड़ा था कि उसके बारे में कुछ कहा ही नहीं जा सकता। इतना बड़ा अजगर मैंने अपनी जिन्दगी में कभी नहीं देखा था।

कुछ साँप हम लोगों के सामने आए ही नहीं मुझे तो मालूम नहीं कि आखिर वो हम लोगों के सामने आए क्यों नहीं—ये तो उन्हीं से जाकर पूछना पड़ेगा।

यह पूछने का मौका, पता नहीं कब आए, अच्छा अब हम लोग आगे बढ़ते हैं साँप देखकर हम लोग साँपघर से बाहर निकले।

आगे जाकर हम लोगों ने क्या देखा? क्या आपको मालूम है? आगे जाकर हम लोगों ने बारहसिंहा देखा।

लोग कहते हैं कि बारहसिंहा के बारह सींग होते हैं—लेकिन मैंने तो दो ही सींग देखे—उन्हीं सीगों के कई भाग हो गये थे। पहले तो मुझे आश्चर्य हुआ कि छोटे से सिर में बारह सींग कैसे निकलते होगें? जब मैंने बाहरसिंहा के सींग देखे, तो मुझे बहुत हँसी आई कि मैं सोच रही थी क्या? और हुआ क्या? मैंने चिड़ियाघर में यह नहीं देखा क्योंकि वहाँ के बारहसिंहा के सींग अभी निकले नहीं थे मैंने कहीं और देखा था। आगे जाकर बहुत से जानवर देखे, मगर उनका नाम पहली बार सुना था। इसलिए मुझे उनके नाम याद नहीं हुये। आगे जाकर एक ऐसा जानवर देखा जिसको लगभग-लगभग सभी ने देखा होगा, उसको लोग हाथी कहते हैं। हाथी को तो सभी लोगों ने देखा ही है, वही हाथी, काला-काला और काले के बीच में एकदम सफेद दाँत। हाथी कितना भयंकर होता है। हाथी देखते-देखते ही हमारी नजर चीते पर पड़ी, हम लोग चीते को देखने के लिए उसके पास गये, वह भी जाली के अन्दर बन्द था वहाँ पर हम लोगों के अलावा और लोग भी उसे देख रहे थे। आश्चर्य की बात तो यह है कि सभी लोग लाइन से खड़े थे और चीता पूरी लाइन का चक्कर काट रहा था। बस बीच में जाली बाधा डाल रही थी, नहीं तो वहाँ पर एक भी आदमी न बचता।

उसी बीच वहाँ पर हुक्कू बन्दर के चिल्लाने की आवाज सुनायी दी, पूरे चिड़ियाघर में उसके चिल्लाने की आवाज सुनाई दे रही थी। दूर से तो उसकी आवाज आदमी की आवाज की तरह सुनाई दे रही थी।

पहले तो मुझे लगा कि किसी आदमी के चीखने की आवाज है, लेकिन जब हम लोग उसके पास पहुँचे तो मालूम हुआ कि ये आवाज बन्दर के चीखने की आवाज है।

चिड़ियाघर घूमते समय किसी ने चाचा से पूछा भी था कि चाचा ये आवाजें किसकी हैं? चाचा ने बताया भी था कि ये आवाजें हुक्कू बन्दर के चीखने की हैं। पर मैंने उनकी बात पर ध्यान नहीं दिया।

वहीं पर कुछ लोग हुक्कू बन्दर को बिस्कुट खिला रहे थे पास में खड़े एक आइसक्रीम वाले ने उन लोगों को डाँटा और कहा कि आप लोग बन्दर को बिस्कुट मत खिलाइए—फिर उन लोगों ने खिलाना बन्द कर दिया।

हुक्कू बन्दर बहुत तेज कूदता है। उसे देखकर मुझे बहुत आश्चर्य हुआ, क्योंकि मैंने कभी-भी किसी भी बन्दर को इतना तेज कूदते हुए नहीं देखा था।

वहीं पर हम लोगों को नल मिला। हम लोगों ने वहीं पर रूककर उसी आइसक्रीम वाले से आइसक्रीम लेकर खाई और नल सें पानी पीया। हमें वहीं पर से एक चिड़िया दिखाई दी जो कि बहुत बड़ी थी उसका नाम तो मुझे याद नहीं लेकिन उसका चित्र मुझे बहुत अच्छी तरह से याद है। उसी चिड़िया को देखते-देखते हम लोगों ने जेब्रा भी देख लिया, वहीं पर बच्चों की छोटी-सी ट्रेन भी दिखायी दी। इन सभी दृश्यों को देखते हुए हम लोग एक हरे-भरे मैदान में जा पहुँचे।

उस मैदान में हम खूब खेले। खेलते-खेलते यह भी भूल गये थे कि हम लोग कहाँ हैं। उस मैदान में लगभग-लगभग सभी पेड़ छोटे-छोटे मोटे-मोटे थे उनको पकड़कर हम लोग लटक रहे थे। और कुछ लोग पेड़ के ऊपर लटकते हुए चढ़ भी गये थे। हम लोग आराम करने के बाद वहाँ से चल दिए, चलते-चलते हम लोगों ने जो गीत कार्यशाला में तैयार किए थे, उन गीतों को मिलकर गाया और मस्ती से झूमते हुए आगे बढ़ते जा रहे थे। गीत गाते-गांते हम सभी चलते-चलते उसी बड़े गेट के सामने आ पहुँचे जो कि हम सभी को अन्दर जाते समय मिला था। हम लोग गेट के बाहर चले आये, फिर उस जगह से हम लोग दूसरी जगह घूमने निकल गये।
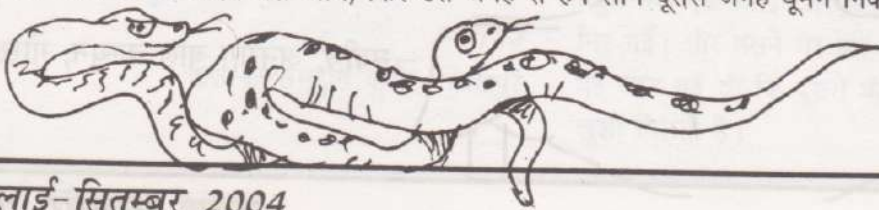
—नन्दिता
अनुराग बाल कम्यून
गोरखपुर

कविता बिल्ली की खिल्ली

एक सुबह सचिन बिल्ली के पीछे भागे
हल्ला सुन कर पड़ोसी जागे
बिल्ली भागकर कमरे में घुस गई
जाकर वहाँ चादर में छिप गई
तभी सचिन कमरे में आया
देखा तो बिल्ली को चादर में पाया
फिर सचिन बड़ा-सा डंडा लाया
कई डंडे उस पर झड़के
देखा तो चादर में गलत काम पाया
सचिन भागे बिल्ली के पीछे
ऐसा लगा जैसे बिल्ली छिप गई धरती के नीचे
तब समीर ने चादर खोला
नाक बंद कर चादर को धोया
समीर की हुई थी मेहनत, मनोज हँसा
दीदी ने देखा, तो समीर मुश्किल में फँसा
कहीं न मिली बिल्ली
उड़ी सभी की खिल्ली
तब नन्दू ने पूछा बिल्ली कहाँ भागी?
बिल्ली ने खिड़की से पड़ोसी की छत पर छलाँग लगा दी
सब ने ली चैन की साँस
सभी ने कहा बिल्ली थी बड़ी खास।

—*नवीन,* अनुराग बाल कम्यून, गोरखपुर

अनुराग बाल कम्यून के बच्चों की कलम से
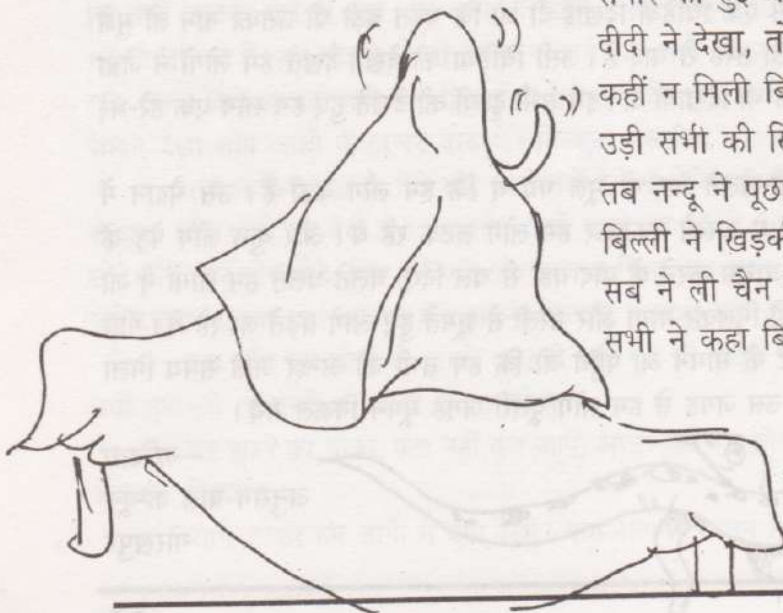
नन्हीं कलम ने लिखा

कम्प्यूटर की खोज

सुबह हो चुकी थी। दीदी बोली जाओ कम्प्यूटर रूम की खिड़की खोल दो रोशनी आयेगी और कमरा सूख जाएगा। मैंने जाकर देखा तो वहाँ कम्प्यूटर था ही नहीं। मैं सोचने लगा। अगर कम्प्यूटर रूम नाम है तो कम्प्यूटर जरूर ही होगा। बहुत ढूंढा नहीं मिला। मैंने लकड़ी की आलमारी की सबसे ऊपरी मंजिल पर चढ़कर देखा किताबों को हटाकर देखा, नहीं मिला। कॉटन में देखा, नहीं मिला। मैंने देखा अलमारी में बड़ा-सा डिब्बा रखा था। मैं उसको देखकर बहुत खुश हुआ, मुझे ऐसा लगा जैसे कम्प्यूटर पा गया हूँ। हकीकत में जाकर देखा तो नहीं पाया। उदास होकर मैं बाहर जाने लगा। तभी मुझे याद आया। आज देश बहुत तरक्की कर रहा है। जैसे आप लोगों ने देखा होगा कि आज छोटी-छोटी वस्तुएँ बनने लगी। जैसे—टीवी, सीडी, लाइट कट जाए तो बैटरी लगाकर देख सकते हैं। वैसे ही कम्प्यूटर का मामला हो। मैं वापस आया। देखा मेज पर माचिस की डिब्बी रखी थी। उसे दौड़कर उठा लिया। लेकिन वहाँ कम्प्यूटर नहीं था। मैंने स्टैपलर के पिन वाले डिब्बे में देखा। उसमें भी नहीं मिला। मैं समझ गया था कि अब मुझे कम्प्यूटर नहीं मिलने वाला। फिर मैं कमरे से बाहर आया। और दीदी से पूछा कम्प्यूटर रूम का कम्प्यूटर कहाँ। दीदी हँसकर बोली थीं अब नहीं है। मैं जान गया था कि वहाँ कम्प्यूटर है ही नहीं।

—सचिन

कक्षा-6, संस्कृति कुटीर, गोरखपुर

पतंग और बच्चे
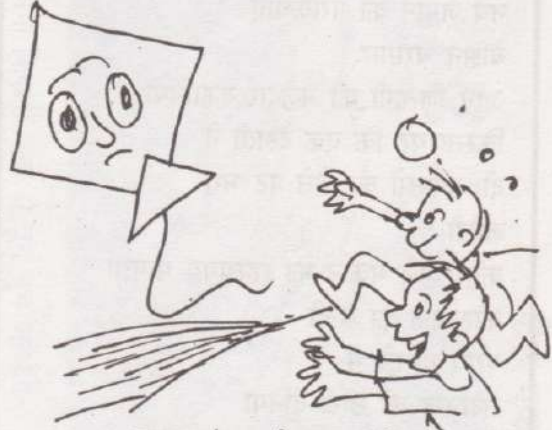
एक पतंग कटी। लहराती हुई उड़ने लगी। वह सोच रही थी कि जाने कहाँ जाकर गिरेगी, उसके मन में तरह-तरह के ख्याल आ रहे थे। कहीं वह पानी में गिर गई तो गल जाएगी। कही काँटों में गिर गई तो फट जाएगी उसने नीचे देखा कि कुछ बच्चे उसके पीछे-पीछे दौड़ रहे हैं। तभी पतंग ने अपनी स्पीड तेज कर ली। बच्चों ने भी अपनी स्पीड तेज कर ली। कभी बच्चे इस गली में तो कभी उस गली में दौड़ रहे थे। इस पर पतंग को मजा आ रहा था। वे गाँव से बाहर चले गए। पतंग आगे-आगे बच्चे पतंग के पीछे-पीछे। पतंग ने नीचे एक बहती हुई नदी की तरफ देखा, पर बच्चे नहीं देख रहे हैं। वह तो सिर्फ उसकी तरफ देख रहे हैं। और आगे दौड़े चले जा रहे हैं। पतंग के दिमाग में एक उपाय आया कि यदि वह नदी से इधर ही गिर गई तो बच्चे वहीं रूक जाएँगे और आगे न जाएगें, नदी में गिरने से बच जायेंगे, फिर उसने अपना मुँह नीचे की तरफ कर उतरना शुरू कर दिया तभी अचानक बहुत तेज हवा आई और पतंग आगे जाकर नदी में गिर गई। और उसने मर कर बच्चों को बचा लिया। वह जान गई थी कि दूसरों के लिए मरने में कितनी खुशी मिलती है।

—नवीन, गोरखपुर

अनुराग ट्रस्ट की दिलचस्प किताबें पढ़ो

पुस्तक का नाम	लेखक	मूल्य
नये ज़माने की परीकथाएँ	होल्गर पुक्र	10 रुपये
बेझिन चरागाह	इवान तुर्गनेव	12 रुपये
आम ज़िन्दगी की मज़ेदार कहानियाँ	होल्गर पुक्र	10 रुपये
किस्सा यह कि एक देहाती ने दो अफसरों का कैसे पेट भरा	मिख़ाईल सल्तिकोव-श्चेद्रीन	10 रुपये
लाखी	अन्तोन चेख़ोव	12 रुपये
कंगूरे वाले मकान का रहस्यमय मामला	होल्गर पुक्र	08 रुपये
कोहकाफ का बन्दी	लेव तोलस्तोय	15 रुपये
पराये घोंसले में	फ़्योदोर दोस्तोयेव्स्की	10 रुपये
सदानन्द की छोटी दुनिया	सत्यजीत राय	10 रुपये
दो साहसिक कहानियाँ	होल्गर पुक्र	10 रुपये
मदारी	अलेक्सान्द्र कुप्रिन	15 रुपये
गोलू के कारनामें	रामबाबू	12 रुपये
अजीबोग़रीब किस्से	होल्गर पुक्र	10 रुपये
रोज़मर्रे की कहानियाँ	होल्गर पुक्र	10 रुपये
बस एक याद	लेओनीद अन्द्रेयेव	10 रुपये
घर की ललक	निकोलाई तेलेशोव	10 रुपये
हिरनौटा	दूमीत्री मामिन-सिबिर्याक	10 रुपये
छत पर फंस गया बिल्ला और तीन कहानियाँ	विताउते जिलिन्स्काइते	15 रुपये
मनमानी के मजे	सर्गेई मिखालोव	15 रुपये

अनुराग बाल पत्रिका यहाँ से भी प्राप्त की जा सकती है :

• अनुराग बाल केन्द्र, डी-68, निरालानगर, लखनऊ-226020 • जनचेतना स्टाल, निकट काफी हाउस, हजरतगंज, लखनऊ (शाम 5 से 8.30) • जनचेतना, जाफरा बाजार, गोरखपुर-273001 • जनचेतना, 989, पुराना कटरा, मनमोहन पार्क, यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद • श्रीमती मधूलिका दुबे, म. नं. 178, सेक्टर-14, रोहतक (हरियाणा) • रामपाल सिंह, भारतीय जीवन बीमा निगम, आवास विकास, रुद्रपुर (ऊधमसिंह नगर) • जनचेतना, 29, यूएनआई अपार्टमेण्ट, सेक्टर-11, वसुंधरा, गाज़ियाबाद-201010 • जनचेतना, 135, एसएफएस, सेक्टर-19, रोहिणी, दिल्ली • जनचेतना ठेला, चौड़ा मोड़, नोएडा • बुक कार्नर, श्रीराम सेंटर, मण्डी हाउस, नई दिल्ली • बुक्स ऐण्ड न्यूज मार्ट, एम.आई. रोड, जयपुर • सुखविन्दर, मकान नं. 14, लेबर कालोनी, गिल रोड, लुधियाना

कैसे एक खिलौने ने बचा दिया ख़रगोश
अभी शिकारी कुत्तों से तुम नुच जाओगे-
चाहे जो भी करो, नहीं तुम बच पाओगे-
तभी दिखायी पडा उसे खरगोश-खिलौना-
दे कुत्तों को उसे, स्वयं बन बैठा बौना!

गोलू

गोलू
नाक बड़ी, कान बड़े, और आंख छोटी करो, बस.. कार्टून तैयार....!
रु 5/- में कार्टून बनवाइए
चैम्पियन
वाह! क्या बढ़िया कार्टून है..?
मुझे भी बनवाना है
मुझे भी
मुझे भी
सबसे पहले मेरा कार्टून बनेगा समझे
वह भी मुफ्त
मुफ्त सेवा उधर है
किधर
यह लो
मुफ्त का कार्टून पसंद आया
चैम्पियन

कार्टून कैसे बनाएं

रवीन्द्र नाथ टैगोर

1

2

3

4

5

चित्र कैसे बनाएं